

प्रकाशक—

**अखौरी सविदानन्दसिंह**

अध्यक्ष, सरस्वती-भण्डार

बाँकीपुर, पटना ।

मुद्रक—

**हरजयसाद खन्ना**

हिन्दी-साहित्य प्रेस

जानसेनगंज, प्रयाग ।



किया है, जो उचित भी है। पद्य-साहित्य की आजकल हमें उतनी आवश्यकता भी नहीं है, जितनी कि गद्य की। अस्तु।

कुछ ही दिन हुए, 'हिन्दी-गद्य-रत्नावली' के नाम से मैंने हिंदी के दस-पांच धुरंधर लेखकों के सरस लेखों का एक छोटा संग्रह संकलित किया था। संग्रह कैसा है, इसे कहने का मुझे अधिकार नहीं। आज इस संग्रह के प्रकाशक महोदय की अतृप्तति से एक दूसरा 'संग्रह' उपस्थित करता हूँ। यह संग्रह पद्य का है, अतः इसका नाम मैंने 'हिन्दी-गद्य-रत्नावली' रखा है। यह भी उसी 'स्टैन्डर्ड' के लिये संपादित किया गया है, जिसके लिए कि 'गद्य-रत्नावली' का संकलन हुआ है। जिन कवियों की सरस कवितार्ण इस पुस्तक में संकलित की गई हैं, उनके संबंध में दो-दो चार-चार शब्द नीचे लिखे जाते हैं। इसके पहले यह कह देना उचित होगा कि इस पुस्तक में केवल ऐसी कविताओं का स्थान दिया गया है, जिनमें भगवद्भक्ति, विष्णुभक्त्येम, वीर भाव, प्रकृति-सौन्दर्य और नाति नैपुण्य का चित्राकण देखने में आया है। शृंगार रसमय पद्य, चिन्ताकटक चमत्कारपण और सरस होने हुए भी विन्यायिका को गद्य में, इस संग्रह में संकलित नहीं किये गये हैं।

सबसे पहले चतुर्धरदासी आते हैं। यह जानीय कवि थे। हिन्दू-जातिके अनीन चिन्तों को इन्होंने अंकित किया है। हिंदुओं का उत्थान और पतन देखना ही तो चंद की 'रामो' पद डालिए। इनमें महाकवि के सभी लक्षण मिलते हैं। हिमाल भाषा में होने हुए भी इनका वृहन् प्रन्थ हिन्दी की अमून्य संपत्ति है। इसे जसपर अभिमान है। इनके बाद महात्मा कथोरदास को स्थान दिया गया है। इस सन शिरामणि के विषय में कहा ही क्या जा सकता है? कर्चर ने 'उधर' को शान कही है, 'इधर' को नहीं।



है। रचना में काव्य मिठास और शोज है। अब महाकवि केशवदाम को लंजिए। भाषा-साहित्य में सूर, तुलसी और कबीर के बाद इन्हीं का स्थान है। यह काव्याचार्य थे। इनकी कविता क्लिष्ट और दुस्रह अवश्य है, पर सरसता और चमत्कार से खाली नहीं। हिंदी भाषा के यह 'माय' हैं। इनके अनन्तर भक्तवर रसयानि और तत्परचान् महाकवि सेनापति की कवि रचना की धानगी मिलेगी। पहले को रचना विशुद्ध मेमकी स्वच्छ आरमो और दूसरे की कविता कवि-कला-कवित आभूषणों की मंजूपा है। इसके बाद सतवर मुन्दरदासजी की 'बानी' दृष्टिगत होगी। उनके पद्यों में सरसता के अनिरिक्त बहुत कुछ पते की भी बातें हैं। शृंगार-स्वस्व विधानों को भी हमने स्थान दिया है, पर पदराश्रय नहीं, उनकी भक्ति और नीति-मयधी मूर्तिप्राप्ति ही संग्रहांत की गई हैं। हम कवि-पक्ति में इन्हें केशव के बाद प्रतिष्ठित करेंगे। बिहारी का भी, भाषा-साहित्य में, एक विशेष स्थान है, इसमें सन्देह नहीं। तत्परचान त्रिपाठी-यधु—भूषण और मतिराम—और फिर लाल का नवर आता है। भूषण हिंदीभाषा में वीर रस के एक मात्र कवि हुए हैं, इनके मध्य में इनका हां कहना पड़ाना होगा। मतिराम का भाषा-मीश्रण अपरव वर्णन की गे चटोली और सरसता अनूठी है। लाल बंदोपाध के वीर-कवि थे। बार-साहित्य में भूषण की कविता के बाद इन्हीं की रचना को स्थान मिलना चाहिए। अब महाकवि देव का लंजिए। यह भी एक उंच काव्याचार्य थे। उनकी कविता मुधारम में डुबी हुई है। प्रत्येक मूर्ति अमूल्य है। माधुर्य प्रसाद और शोज दोनोंही गुणों को इन्होंने अपनी कविता में मूव निभाया है। साहित्य-जगत् को इस महाकवि पर अभिमान करना चाहिए। इनके बाद इन्हें हैं। इनकी मूर्तिप्राप्ति नीति-मयधिनी है, जितने गायक में मागार भाने का प्रयत्न किया गया।













याजी मुखं च हृदयं गयं पञ्चानं, दौरे सुमन्त्रिं दिक्स्थितं दितानं ॥३०॥  
 तुम्ह लेहु लेहु मुख जंघि जोध, सज्जाह सूर सव पहरि मोघ ॥३१॥  
 पहुँचे ॥ जाय तचे सुरंग, मुख मिरन मूप जुनि जोध जग ॥३२॥  
 छलटी सुराज धृष्टिराज आग, थकि सूर गगन, धर धमत नाग ३३  
 कम्मान वान छुहदि अपार, लागत सोह इमि सारि धार ॥३४॥  
 भयमान घान सव थोर मेल, घन सोन वदत अरु रुकन रेत ॥३५॥  
 सारे वरात ० के जोध मोह, परि रुंउ मुह अरि मेल सोह ॥३६॥



परे गृह्यत रित्त-म्येन अरि कति निद्रिय मुग्र राय ।  
जीति चर्यां प्रथिगत रित्त, मरुत मर भय गुण्य ॥३॥  
पदमावति इति नै चर्यां दग्धि गान प्रथिगत ।  
एते परि पतमाद० का भई ज्ञानि भयान ॥४॥

• **fast**

मई जु आनि अवा न आव गाथायनीन मुग ।  
 आज गरी जनिग वी ' बु न गनन मुग ॥  
 काय जोय निका अतन करिय पनी अत करिय ।  
 बान नाद न ॥ १ ॥ मुनक नगन मर म ॥ २ ॥  
 एवै पहाय न मर क, अरि न गन न वनमवत  
 आव अकारि, दार करि न मा न गनन ॥ ३ ॥ ॥ ॥

[illegible]



मन के मारे बन गये, बन तजि बसी माहि ।  
 कह कबोर क्या की जण, यह मन ठहरै नहि ॥७०॥  
 कबिरा सोया क्या करै, जगन की कर चौप ।  
 ए दम होरा ह्याल हैं गिनि-गनि हरि को सौंप ॥७१॥  
 मांस अहारी मानवा परतय राक्षस अग ।  
 ताकी संगति मत करौ, परत रग में भग ॥७२॥  
 हिन्दू के दाया नहीं, मिहर तुरुक के नाहि ।  
 कह कबीर दाँ १ गये, लस २ चौ-प्री माहि ॥७३॥  
 कबीर मनवाय जान का, मर मनवाय नाहि ।  
 नाम-पियारा जो दिखै सो मनवान नाहि ॥७४॥  
 मरग मरग राउ के ठडा पानी पीव ।  
 देगि बिभानी नृपती, मर लखार जीव ॥७५॥  
 मन्थित है कृप-जल भाषा बरन नीर ।  
 भाषा मनगुन मन्थि है मन मन गोर गधोर ॥७६॥  
 पंथ, पटि पटि जग मुखा, पड़िन दुखा न होय ।  
 हाई यन्त्र, वैम का पटि सो पड़िन होय ॥७७॥  
 ॥७८॥ सारं सब मरै सब सारं सब चार ।  
 नो गति सेवे मरु को, फरे कलै अघार ॥७९॥  
 मरने में माइ मिले, मोरन लिया नगार ।  
 अस्थि न खो-उरपना, मनि मुपना है जग ॥८०॥  
 मानक पडे दिन बीतवै, चकवा ३ रोन्हा रोय ।  
 चल चकवा ४ वा देसका ५ जग गैन ना होय ॥८१॥



कचहुँ कान्ह कर छाँड़ि नंद पग द्वै करि धावत ।  
 कचहुँ घरनि पर बैठिके, मन महुँ कछु गावत ॥  
 कचहुँ बलटि चरै धामधौ, छुट्टन करि धावत ।  
 मूर स्वाम-मुख देखि, महर बन हरष पढ़ावत ॥२॥

५७

छोटी-छोटी गुड़ियाँ जोगुरियाँ छोटी,  
 छोटी नय जोनि मोती मानो कज दलन पर ॥  
 लज्जि आंगन गिरी, ठुमक ठुमक सोली,  
 मूनक मूनक चारै पैरनी मृदु मुग्ध ॥  
 छिछिनी कज्जि करि हाटक मन जटित  
 मृदु कर कमल पट्टियाँ रुषिर वर ॥  
 पियरी पिछौरी भीनी और उरमा भीनी,  
 बालक दामिनि मानो चाँदे बागो वारिधर ॥  
 उर वधनसा कठ कटुना मङ्गले वार,  
 वर्ना चटर्गा, मयि बिन्दु मुनि मन हर ॥  
 ५ नरनि नना । ननबलिबिन चारै,  
 मृग्य मानो पर बागो बामिन समस मर ॥  
 चहुँदां वन वन नन । ननि, बाल दटि,  
 . . . बनि मन्त्रा ननि प्रेम मुग्ध ॥  
 'कलक कि लीक देखे द्वे द्वे दगुनिया लमे,

. . . माने मन रमे न. न. वचन वर . . .

५८

नमन न मन काम नय करे  
 कच मग दार नृद्वयन जो कच मानो वर द क वरे ॥





मैया, मोहि दाऊ बहुत खिन्नयो ।

मौमों कहत, मोल को लंनों, तू जमुमति कय जायौ ॥  
 कहा करौ यहि रिस के सारे, खेद न हौ नहि जातु ।  
 पुनि पुनि कहत कौन है माता, को है तुमरो तातु ॥  
 गोरे नेह, जसोग गोरी, तुम कत म्याम सरीर ।  
 हुदुही दी है हमत बाल मय, सिन्धे दंत बल्यार ॥  
 तू मोही को मारन सोकी, दाउहि कपटु न स्त्रीभै ।  
 मोहन को गुन्य रिम ममेन लखि, जमुमनि मुनि मुनि रीमै ॥  
 सुनहु कान्हू बलमद चषाई, जनमन ही को धूत ।  
 मार्याम मां गोवन की मौ, ही मैया न पुन ॥५॥

५५

मैया मेरी, मैं मायन नहि ग्यायो ।

भोर भय गीवन के पाये मनुवन मोहि पठाये ॥  
 बार पहर बस यत्र भटायो साज परं यत्र आये ।  
 मे वाद है बलिजन का दू टा दाफा किनि बिनि पाये ॥  
 स्वार वाद मय मे पर है, बरवस दुख लपटाये ॥  
 न बनना मन का यन्त्रि न मे इनह क' बलिपाये ।  
 चिथ नर कटु मरुत नर न जानि प्यारा नाया ॥  
 ॥ न अलो दूर केजिग बटुगि ना न नयाये ।  
 मुरदाय नर नर मे नया । ॥ नर कटु मयाये ॥६॥

५६

रमाय मैग मग हवन चैगो मोटी ?

चला बार मोह दूर नवन मरु नर यत्र है छोटी ॥  
 न ता कटु न बल' क' नलो वा दे है नारी मोटी ।



दे मैया, भैंसा चक होरी ।

जाह होठु आरे पर रागो, कान्हि मोल ले राखे कोरी ॥  
 ले भाये हेमि स्याम सुगत हो, समि रहे रंग रग बटु कोरी ।  
 मेधा विन; और को राखे, बार-बार हरि करत निहोरी ॥  
 बोलि लिय मय मग्य मग के, गजनन स्याम नर की पोरी ।  
 तेमइ हरि तेमइ मन बातक, कर भेंग-चडरिनि की जाली ॥  
 देखनि नननि जया-न यद छाये, रि. मान बार-बार मुख सोरी ।  
 सुरदास प्रभु हनि कलम क्लृप्त, प्रज-वर्जिता तून डारति तोरी ॥२॥

द्वय मे गच्छ भगवन् श्री

दुन्दुभान क भानि भानि क क दान द र में रूढ़ी ॥  
 लम्बा अर्वादि क र वन वाह, दम्बा अर्वा भानि ।  
 री क रान क री क रान री क रान री क रान ॥  
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥  
 दुन्दुभान क रान क रान क रान क रान ॥  
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥  
 दान दान दान दान दान दान दान दान ॥

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

[illegible]







सब निर्दग्ध धरमरत पुनी । नर-अरु नारि चतुरस्य गुनी ॥  
सब गुनग्य पंडित मय ग्यानी । सब कृपाय नहि कष्ट म्यानी ॥

शेष

राम राज नभगेस' सुनु, सचराचर जग माहि ।  
काल-करम-सुभाव-गुन-कृत दुख काटुहि नाहि ॥ ३ ॥

बीकान

भूमि सब सागर सुमंख्य । एक भूष रघुपति कोसला ॥  
भुवन अनेक रोम प्रति जासू यह प्रभुता कहु बहुत न तासू ॥  
सो महिमा समुमज प्रभु कैरी यह बरनत हीनता घनेरी ॥  
सो महिमा गंगेस जिन्ह जानो । फिरयेहि चरितनिन्हहु रनिमानी ॥  
भोड जाने कर फल यह लीला । कहहि महा मुनिपर कमलीला ॥  
राम राज कर मुग मरदा । बरनि तमरुइ फनीम सारदा ॥  
सब उदार मय पर उपकारी विष-वरन-सेवक तर नारी ॥  
मृद-नारि-अन-रन मय भरी । तेमन-वच-जस पति-हित-कारी ॥

शेष

इह जनिन्ह कर भेद जन्, नरनक नृप-समाज ।  
जिनहु मनाहि अस मृत्तिय जग रामचंद्र के राज ॥ ४ ॥

बीकान

कृति कहहि महा नर कानन । रहहि गकर्मग तन पचानत ॥  
मग मग मरज वैर विमराई । मयन्ह परमपर प्रीति बडाई ॥  
कृति मग मग जाना जन्दा । अमय चरति वन करहि अनदा ॥  
मीनन पवन मरनि वह मदा । गु-जन अति नेउ चलिमकरंदा ॥

१. मरुत; काक पुनंदि, मरुत म, गाय चरित इह २६ ई ।





राम करहिं धातन्ह पर प्रीती । नाना मांति मिखावहिं नीती ॥  
 दरपित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा ॥  
 अहनिमि विधिहिं मनाव रहही । धीरधुरीर-चरन-रति चहही ॥  
 दुइ मुन मुन्तर सीना जाये । लव कुम वेद पुराननि गये ॥  
 दोउ धितयो धिनयो गुनमरि । हरि-प्रतिविम्ब मनहुं प्रतिमुर ॥  
 दुइ-दुइ मुत मय धातन्ह करे । मये रूप गुनसीउ पनरे ॥

शेष

ज्ञान-गिरागोभीत अत्र, माया-मन-गुन-पार ।

मोह मयिदातदपन कर नर-चरित उदार ॥ ७ ॥

योगी

धातकाल मरजु करि मज्जन । बैठहि मभा मह द्विज मज्जन ॥  
 वद पुरान वामन कथानि । मुनिहि राम जगदपिसय जानहि ॥  
 अनुजहि मज्जुत भोजन करी । देख मरजु जननी मुख भरही ॥  
 मरन मज्जुन ननउ बाइ । मदिन पवनमुख उषसन जाई ॥  
 रूमहि बैठ राम गु-गान । कह हनुम त समनि-अवतार ॥  
 मुन विमदगुन अति म उ रावरे । वहु र-रतुनिकरिचि एकठावहि ॥  
 मय के गुन गुन गाई पुराना । रामचरित पावन विधि नाना ॥  
 नर अरु नारि राम गुन गानहि । करहि ददम निसिजासन जानहि ॥

अन्य

अथ श्रुती राम-नर कृष्ण मुन्य-मपदा-मयाज ।

महम मय नहि कति मरति चह नृप राम विराज ॥ ८ ॥

अन्य

नारदादि मनदादि मुन-या । इरमन जागि बेमलाधोमा ॥  
 दिन दिन मकन अजाया आरति । देखि नगर विराग विमरावहि ॥



बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुं कुबेर ते ।  
सब सुखी सब सवरित सुन्दर नारिनर सिमु जरठ जे ॥१३॥

शेख

वत्सर दिसि सरजू बह, निर्मल जल गंभीर ।  
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहि तीर ॥१४॥

चौकार

दूरि फराक रुधिर सो घाटा । जहँ जलपिबिहियाजि गज-छाटा ॥  
पनिषट परम मनोहर, नाना । तहां न पुरुष करहि असनाता ॥  
राजघाट सब विधि सुन्दर बर । मज्जहि तहां बरन चारिउ नर ॥  
तीर-तीर देबन्द के मंदिर । चहुँदिसि जिन्हके उपवन सुन्दर ॥  
कहुँ-कहुँ सरिता-तार बदासी बसहि ग्यानरत मुनि संन्यासी ॥  
तीर-तीर तुलसिका सुहाई । पुन्द-पुन्द बहु मुनिन्ह लगाई ॥  
पुर-सोभा कहु बरनि न जाई । बाहिर नगर परम रुचिराई ॥  
देवत पुरी अखिल अप भागा । बन उपवन बापिका तहागा ॥१५॥

बन्द

बापी तड़ाग अनूप रूप मनोहरापत मोहहीं ।  
सौपान सुन्दर नीर निर्मल देखि मुर मुनि मोहहीं ॥  
बहु रंग कज अनेक रंग बूझहि मधुप गुजारहीं ।  
आराम रम्य पिकादि रंग-रव जनु पबिक हंकारहीं ॥१६॥

शेख

रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाई ।  
अनिमादिक सख मंपदा, रही अवध सब छाई ॥१७॥

( राम-चरित-मानस )

# ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कहाँ तात, मान, धान, मगिनी, भाभिनी, भाभी,  
छाटे छोटे छोहरा अभागे भारे भागिरे ॥  
हाथी छोरो, घोरा छोरो, महिष वृषभ छोरा,  
छेरी छोरो, सोनै सोजगाधो जागि जागि रे ॥”  
तुलसी चिरौछि अकलानी जातुधनां कहैं,  
“बार बार बहौ, पिय कपि सौंन लागि रे ॥३॥

५३

पयो विकराल बेध देखि, मुनि सिंह-नाद,  
उरयो मेरनाद सविनार पदै रायनो ।  
बेग जीत्यो मादत प्रताप मारसइ काटि,  
कालऊ करालता बहुरि जीतो बाधनो ॥  
तुलसी सपाने जातुधान पक्षिनाम मन,  
“जाका एमा दून मा मादिथ अबै आयनो ॥”  
काहे की कुसउ रावे गन बाधन ॥ ८,  
बिषम बानी मा ॥ १३ ॥ बर के बाधनो ॥४॥

५४

पाना पानी पाना मय रानी अकलानी कहैं  
जनि है रानी, गति जानि गन बालि है ।  
बमन विमार, मं नवन ममलन न  
आनन नुमान कहैं म्या ॥ काह पालिहैं ?”  
भुवसी नैक वै सीति गाय मुनि नाय कहैं  
“का ॥ शान के न मन में कटयो केना कहि है ॥”  
बापुगं विभीषन पुकारि बार बार कह्यो,  
“बानर बड़ा बड़ा बनै यर पालिहै” ॥५॥

५५









तुलसी जो पै राम सो, नाहिं न सहज सनेह ।  
 मूँह मुझयो यदि ही, माँह भयो लजि नेह ॥१६॥  
 होत भले के अनमले, होइ दानि के सूभ ।  
 होइ कुपूत सुपूत के, ज्यों पावक में धूम ॥१७॥  
 परपि विस्व हरषित करत, हरत ताप, अघ, प्यास ।  
 तुलसी दोष न लछर को, जो जल जरै अवाम ॥१८॥  
 सारदूत को स्वांग करि, बूझ की करनूति ।  
 तुलसी ताप चाहिष, कीरनि, विजय, विभूति ॥१९॥  
 लोकांशुनि—कृपे मई, आँखी सदै न कोइ ।  
 तुलसी जो आँखी सदै माँ आँखी न होइ ॥२०॥  
 मरनामन कह जे नज्म, निज अनर्घ अनुमानि ।  
 न नर पामर पापनर निरौ विनेकन जानि ॥२१॥  
 तुलसी भरे न मोह नम केरे कोरे गुन-भाम  
 नरक उमर जै नरक दिन रात्र-दुख-रात्र राम ॥२२॥  
 नार लाली माँह गुन नम मोह रात्र रात्र  
 नरक जरे नरक भरे रात्र-दुख की जानि ॥२३॥  
 नरक नरक न ममन जो कोरिष नैन  
 नरक न नरक जेरे नरक नरक कौन ॥२४॥  
 नरक न नरक न नरक न नरक नरक नरक ।  
 नरक नरक नरक नरक नरक न नरक किछार ॥२५॥

( समाप्त )







दीन्हेसि जग देखन कहैं नैना । दीन्हेसि सखन सुनै कहैं बैना ॥  
 दीन्हेसि कंठ पोल जेहि माहां । दीन्हेसि कर-पटव बर बाहां ॥  
 दीन्हेसि चरन अनूप चलाई । सो पै मरम जानु जेहि नाहीं ॥  
 जोवन मरम जान पै यूढ़ा । मिलै न सरनापा जग दूँदा ॥  
 सुख कर मरम न जानै राजा । दुखी जान जा कहैं दुख यात्रा ॥

शेष

मरम जान पै रोगी, भोगी रहै निर्यत ।  
 मय कर मरम सो जानै, जो पट पट रह निन ॥ ७ ॥

बोलाई

अनि अपार करता कै करना । बरनि न कोऊ पावै धरना ॥  
 मान मरग जो कागः फरई । बरता मान सनुइ मनि भरई ॥  
 जिवन जग साया बन दाया । जिवन केस रंग पवि पाया ॥  
 जिवत गेह गेह दुनियाई । मय गुन औ गगन नगाई ॥  
 मय दिखनी रुनि दिख समारु । दिगि न जायगुनममु द्रष्टारु ॥  
 एत कोन्ह मय गुन परगटा । रहि मनुइ न रुइ न घटा ॥  
 'म जाति मन गरब न होई । गरब करै मन बाँझ साई ॥

२१०१

बड गुनवन गुमाई बड़े होय सो बेग ।  
 औ अम गुन सबारै, जो गुन रुई अनेग ॥ ८ ॥

( पद्यावत )



कवि

दृष्टि नकशोधि गई देखत सुभजनमई,  
 एक ते सरस एक द्वारका के भीन है ।  
 पूछे बित कोऊ काहू में न करै बान,  
 जहां देवता में बैठे मय साधि-साधि मौन है ॥  
 देखन मुसामा पाय पुनजन गई पाय,  
 'हुवा करि यही कहां कौनो विप्र गौन है ?'  
 'धीरज अधीर के, हरन परपीर के बनामों  
 बदधीर के महल यहां कौन हैं ?' ॥

शेष

दाम्पत्य पाठि नई गयो जहा दुःख जदुराय ।  
 हाथ तारि टाढ़े भयो बोन्यों मौम नराय ॥५॥

नईरा

मौम पग न भंगा नन में प्रनु जान, को आदि बसै किहि पामा ।  
 धोनी कली मा, कली दुपली अरु पाँच पगानरु की नहि तामा ॥  
 द्वार मन्त्री द्विज नृप । नहि मन्त्री नहिमा वगुन अभिरामा ।  
 दीनदया, का १३१ नाम, बनावन आपुना नाम मुसामा ॥६॥  
 आपन 'द्वि' १२ १५ मा प्रनु नृपिन दम्पति हा दुम मन्त्री  
 माप भया मुसामावक क कटपटम क द्विप मन्त्रि मन्त्र्या ॥  
 द्विप कुरा 'द्वि' १२ मा प्रनु जान मुसामा १६ मन्त्र्या ।  
 माप भया मन्त्र्या १३ मा मन्त्रि द्विप मन्त्रि मा द्विप मन्त्र्या ॥७॥  
 मन्त्रि द्विप मन्त्र्या १३ मा मन्त्रि द्विप मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या ॥८॥  
 मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या ॥९॥  
 मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या १३ मा मन्त्र्या ॥१०॥





संवेष्टा

भौन भरे पकवान मिठाइन, लोग कहें निजि हैं सुखमा के ।  
 मौन-सरेरे पिता अभिलाषन, 'जैवै कवै हरि सग समा के' ॥  
 राम्हन एक फोंक दुनिया मेर पावरु' चामर लायो समा के ।  
 प्रीति की रीति कहा कहिए, विहि बैठे चकारत कन रमा के ॥१५॥

सोप

मुठी दूसरी भरत ही गहिमिति पकरी गाइ ।  
 तेसी तुम्हें कहा भई सपति का अतयाइ ॥१६॥  
 कहा गहिमिनो फात में, यह धौ कौन भिगाए !  
 करत मुदामहि आप सो, होत मुदामा आप ॥१७॥

गवेषा

हाथ गयो मनु को कमला कहै, नाथ कहा तुमने चित जारी ।  
 नदुल लाय मुठी दुइ दीन कियो तुमने दुइ लोरु-विहारी ॥  
 रदाय मुठी निमरी अथ नाथ 'कहा निज वाम की आस विमारी ।  
 रकहि आप समान कियो तुम चाहन आपहि होन भिलारी ॥१८॥

वर्णित

कह्यो विश्वकर्मा सो हरि 'तुम जाय करि  
 नगरि मुदामाज की रचौ बेग अवही ।  
 रतन-जटित धाम, सुषरनमई सब,  
 कोट औ बजार बाग फूलन के नवही ॥  
 कम्पदुल्ल डार गज रथ असवार प्यारे  
 कांजियो अपार दास दामो देव छवही ।



अंतर दाव लगी रहै, धुआँ न प्रगटै सोय ।  
 कै जिय जानै आपनो, (कै) जा सिर सीती होय ॥१०॥  
 कमला धिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय ।  
 पुरष पुरातन को बधू, क्यों न बंधला होय ॥११॥  
 कहि रहीम धन बढ़ि घटै, जाति घनिन को दात ।  
 घटे बढ़े उनको कहा, धास बैचि जे छात ॥१२॥  
 कहि रहीम संपति संगे, बनत बहुत बहु रीत ।  
 विपति-कमौटी जे कसे, सोई सोँचे मीन ॥१३॥  
 कहु रहीम केतिक रही, केतिक गई विहाय ।  
 माया ममता मोह परि, अंत घले पधिताय ॥१४॥  
 कहु रहीम कैसे निभै, बेर बेर को संग ।  
 वै होलत रस आपने, बनके फाटत अंग ॥१५॥  
 कागद को सो पूनरा, सदजदि में घुरि जाय ।  
 रहिमत यह अपरज लखो, मोऊ स्वीयत शाय ॥१६॥  
 कैमे निबहैं निबल जन, करि सचलनि सो बैर ।  
 रहिमत बसि सागर बिपे, करन मगर सो बैर ॥१७॥  
 खोरा मिर ने काटिण, मरियत नमक लगाय ।  
 रहिमत करार मुखन को, चाहियत इहे सजाय ॥१८॥  
 लैर, लुन, खार्मी, लुमी, बैर, प्रीति, मदपान ।  
 रहिमत दावे ना दूँ, जानन मऊल जहान ॥१९॥  
 क्षिमा बडेन को चाहिण, छोडेन को उतपात ।  
 का रहाम हरि को पट्ट्या, जो भुगु मारी लात ॥२०॥  
 जब लगि वित्त न आपुने, तब लगि मित्र न कोय ।  
 रहिमत अचुज अचु रिन, राव नाहिन दिन होय ॥२१॥







रहिमन नीचन संग यमि, लगत कलंक न पाहि ।  
 दूध कलारो कर गढे, मद समुझै सब ताहि ॥५६॥  
 रहिमन पानी राखिए, वितु पानी सय सून ॥  
 पानी गये न ऊपरै, मोती, मानुष, चून ॥५७॥  
 रहिमन ब्याह विआधि है, सकहु तो जाहु ब्याय ।  
 पौवन बेड़ी परत है, डोल बजाय-बजाय ॥५८॥  
 रहिमन बहु भेषज करत, ब्याधि न छाँड़त साथ ।  
 मृग मृग बसन अरोग बन, हरि अनाम के नाथ ॥५९॥  
 रहिमन पात अगम्य की, कहन सुनन की नाहि ।  
 जे जानत ते कहत नाहि, कहत ते जानत नाहि ॥६०॥  
 रहिमन राज सराहिण, ससि सम सुखद जो होय ।  
 कहा बापुरो भानु है, तखी सरैयन ग्याय ॥६१॥  
 रहिमन रिम को छाँड़ि कै करों गरीबी भेस ।  
 मोठो धोला, नै चलो, मयं तुम्हारो वंस ॥६२॥  
 रहिमन लाग्य भला करी, अगुना-अगुन न जाय ।  
 गग सुनत पय पियन, माय महन अरि ग्याय ॥६३॥  
 रहिमन बिना बुदि नहि नही अरम तस दान ।  
 न पर तन्म बुधा अरै, पम्पु तबनु पद बिपान ॥६४॥  
 रहिमन न नर भर चुके न कहु मागन जाहि ।  
 इतन पात । न नर । न नर । न नर । न नर । न नर ॥६५॥  
 नाम न । न नर । न नर । न नर । न नर । न नर ।  
 नाम न । न नर । न नर । न नर । न नर । न नर ।  
 नाम न । न नर । न नर । न नर । न नर । न नर ।  
 नाम न । न नर । न नर । न नर । न नर । न नर ।





सोपडा

रहिमन मोहि न सुहाय, अभी पियावन मान बिन ।  
जो विष दैय जुलाय, प्रेमसहित मरिबो भलो ॥ १८ ॥  
( रहिमन के दोरे )

## ११—राज्य-श्री-निन्दा

[ केशवदास—न० ११०८—१११८ ]

सज्जित वन्द

एक काल राम दैय, सोधु बंधु करत संव ।

सोभिजै सवै सो और, मंत्रि मित्र ठौर-ठौर ॥ १ ॥

यानरेम युधनाथ, लंकनाथ-बंधु साथ,

सोभिजै सवै समीप, देम-नेम के महीप ॥ २ ॥

गोदा

मरस स्वरूप विलोकि कै, उपजा मदनहि लाज ।

आइ गये ताहीं समय 'केशव' एपि शूरिराज ॥ ३ ॥

असित, अत्रि, भृगु, अंगिरा, कश्यप, केशव व्यास ।

विश्वामित्र, आगन्ययुत वान्सीकि, दुर्वांस ॥ ४ ॥

वामदेव मुनि काश्यपुत भरद्वाज मनिनिष्ठ ।

पर्वनाथि है सकल मुनि आये मदिन बरिष्ठ ॥ ५ ॥

नगध्वजविज्जिता सुन्द

मन्त्र गमचन्द्रजु उठे विलोकि कै तब

मभा समेन पा पर विशेष पूजियां सबै ।



## सोमर छंद

राम — मुनि ज्ञान मानस-हंस, जप जोग जाग प्रशंस ।

जगमांक है दुख-जाल, मुख है कहां इहिकाळ ॥ १२

सहै राज है दुख-मूल, सब पाप को अनुहूल ।

अब ताहि लै अपिराय, कहि कौन नरफहि जाय ॥ १३

## चौपाई

सोदर मन्त्रिण के त्र चरित्र । इनके हम पै मुनि मर-मित्र  
 इनहीं लगे राज के काज । इनहीं से सब होत अकाज  
 राज भार नष्ट भैयनि दियो । झल बल छीनि सबै तिन लयो  
 जप लीन्हो सब राज विचारि । नल-दमयंती दियो निहारि  
 राजा सुरधराज को गाथ । मोपी सब मन्त्रिण के हाथ  
 ससत मृगश-दान विचारि । मन्त्रिण राजा दियो निहारि  
 राज-भ्री अनि चचल नाथ । नाथ का मुनि लीजे बाल  
 यौवन अरु त्रिवेणी रस । धिनश्यौ को न राज-भ्री मग  
 शास्त्र मुजलहु न पावन नाथ । मालिन होत अति नाके गाथ  
 यद्यपि है अति दान-द श्रेष्ठ । नदवि मुजति गगन की सृष्टि  
 महापुरुष सो नाथ । प्रीति सो कभू माहत रीति  
 उपर मरीचकानि की गोत । उन्हा हासन हारिनी होती  
 गुह के यवन अनेक अनुहट । मुनि जान स्वयंजन को सूत्र  
 मेत बलिन नव वसन नृपति । भिदन नहीं जल अयो उपदेश  
 मन्त्रन ह का मनो न जानि । अनिशुन्दक अयो उत्तर देखि  
 पहिल सुनै ॥ भार नुतान । मारो कारणो ज्यो न गनवि



यद्यपि पुरुषोत्तम की नारि । तदपि मङ्गलसलजन अनुहारि ॥  
 दिनकारिन की अति ट्रेपिणी । अहित लोग की अन्येपिणी ॥  
 मन-भृग को सुवधिका की मीति । विषय-वेष्टि के वारिद-रीति ॥  
 मद-विशाधिका को भी अयो । मोह-नोंद की राध्या मयी ॥  
 आशीविष गोपनि की दरी । गुण-मग पुरुषन-कारन छरी ॥  
 एक दमन के। मंषावली । कपट-मृत्य-कारी की थली ॥

शेष

वाम काम-करि की किर्भी कोमल कनलि मुखेस ।  
 धीर-धम-द्विजगज की, मनो गढ़ की देख ॥१६॥

शेष

नृप-गर्गी ॥३॥ मीने रहे । बान बृताव गह-दो करे ॥  
 दम्प-वर्ग पहिचाने नहा । माना ममिपान है गरी ॥  
 मदा भव ॥ ३॥ न बाध । हमो हाट अति करि जनु प्रोथ ॥  
 रत्न-विदाम-बादन आगुरी परदार गमने आगुरी ॥  
 नृमया रहे नृमया वर्गे रग मुग्धनि पाय मां पड़ी ॥  
 रा हर विनये यह दया । बान करे ना बड़ीवै मया ॥  
 'ममन दाव' ॥ अति रत्न ॥ 'म' जाने नो बह मनमान ॥  
 रा हर मा अवन करे । मदन की मी पदवी रहे ॥

शेष

राज अति 'हन' का करे म इ वाम अमित्र  
 मुख-वन्द्यै तन्मय मनन मन्त्री मित्र ॥१७॥

शेष

हरी हरी रंग गह मन्त्र नृम मय तानन दो अविनाश ॥  
 रेखा 'म' मृगन मन्त्रिय । नेमी गम्य भा जानिये ॥



सेम, महेस, मनेस, दिनेस, मुरेसहु जाहि निरंतर गावैं ।  
जाहि अनादि, अनंत, अगंड, अछेद, अभेद, मुवेद बतावैं ॥  
नारद से मुक व्यास रटैं पथि हारे तऊ पुनि पार न पावैं ।  
साहि अहीर की छोहरियो छुडिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ॥४३॥

५४

धूरभरे अति सोभित स्वामजू तैसी धनी सिर सुन्दर छोटी ।  
खेचत खात फिरें भोगना, पग पैजनी बाजती, पारी कछोटी ॥  
वा छवि को रसस्यानि यिलोकत वारन काम कलानिधि कोटी ।  
काग के भाग कहा कहिए हरि-हाथ सों लै गयो माखन रोटी ॥५॥

५५

श्रीपति औ गनिका गज गीध अजामिल सों कियो सों न निहारो ।  
गौतम-नोहिनी कैसे तरी, महाद के कैसे हरयो दुख भारो ॥  
काहे को सोच करै रसस्यानि, कहा करिहै रवि नंद' विचारो ।  
कौन की मरु परी है जु माखन-चाखनहारो हे राखनहारो ॥६॥

( मुजाब रसमान )

## १३-भक्त-भावना

[ मनापनि-म. १६४५-१७०० ]

इति

महामोह उठनि मे, अगत-अकठनि मे,  
दिन दुख-उठनि मे जान है विहाय के ।  
मुख को न लेम है, कंठम सब भोजन को,  
मनापनि याही ने कहन अकुलाय के ॥





## १४-सुन्दर-विचार X

[ सुन्दर-त. ११५३-१०४६ ]

कवि

काहूँ सों न रोष तोष, काहूँ सों न राग-द्वेष,  
 काहूँ सों न बैर भाव, काहूँ सों न घाव है ।  
 काहूँ सों न बफ़याद, काहूँ सों नहीं भियाद,  
 काहूँ सों न संग, न तौ काहूँ पण्डपात है ॥  
 काहूँ सों न दुष्ट बैन, काहूँ सों न लेन-देन,  
 मझ के विचार, कष्ट और न सुहाव है ।  
 मून्दर कहन मोई ईमन के मदाईम,  
 मोई गुमनेव जाके दूसरो न खान है ॥ १ ॥

१५

ताँव गवि गँ गनमाहि रक्खन केव,  
 हय गव गावन, गुरन चहाँ बल है ।  
 शकत जुभाऊ म'नाइ भिन्न' राग गुनि  
 मुननहि कायर हो गति जान कह है ॥  
 न रक्खन बाँही नाना नरवाहि बदे,  
 मार मार कान पान गदभल है ।  
 नम नुद म अ'इत मन्त्र मभट मोई,  
 नर माहि नरमा रुद्रान मरुत है ॥ २ ॥

१६

बड़ का मनेही धीन विद्रुन नरै धान,  
 मनि विनु अहि नैम जौवन न लहिये ।



तुल्य धर्म, बंध-धर्म, अर्थ धर्म न कष्ट,  
सुंदर कहत ऐसी बानी मरी कहिय ॥५८॥

५८

गुनि जैसा धन आके, गुनि सो संसार-गुन,  
गुनि जैसा भाग देगी, धन जैसा गरी दे ।  
बाग जैसा वनगर्भ, ग्याग जैसा मनमान,  
बड़ाई विदुनि जैसी, नागिनी गो मरी दे ॥  
बलि जैसा इन्द्राक्ष, विप्र जैसा विविशंक,  
बोलीन बरबट जैसी, मित्रि भी ठगारी दे ।  
बाल्यता न काहु बारी, पैनी बलि लख जारी,  
मनोर कहत नाहि बरबट हमारि दे ॥५९॥

५९

रत्न न काहु विदुनि दे रत्नगर्भ,  
रत्न पैनी दे साहु रत्न धारु दे ।  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु

६०

रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु  
रत्न जैसा नदी नदी, जैसा नदी दे साहु



अथर धरत हरि के परन आठ दीठ पट जोति ।  
 हरे बांम की बांसुरी इन्द्र-धनुष सी होति ॥ ९ ॥  
 या अनुरागी धिप की गति समुझै नहि पैय ।  
 ज्यों-ज्यों दूधै स्याम रंग, त्यों-त्यों वज्रल होय ॥ १० ॥  
 कहा भयो जो बोल्यो, मो मन तो मन साथ ।  
 उड़ी जाति किनहुँ मुड़ी, तऊ उड़ायक-हाय ॥ ११ ॥  
 कहलाने एकन समन अहि-मयूर, मृग-बाध ।  
 जगत तपोवन मो दियो दीर्घ दाप निदाप ॥ १२ ॥  
 रनिन भृङ्ग पंदावरी, करन दान मधु नीर ।  
 मन्द-मन्द आवन चल्तो कुंजर-कुञ्ज-समीर ॥ १३ ॥  
 दुमड दुगाज प्रजानि मो क्यों न बड़े अनि ईद ।  
 अधिक ओं रंग जग कै निहि मानम रवि चन्द ॥ १४ ॥  
 कहै वरै सब अनि मुमति, वरै मयाने लोग ।  
 न न दवावन निमक ही, पानक राजा, रोग ॥ १५ ॥  
 सबै समन करनार है नागरन क नवि ।  
 गया गय गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ १६ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ १७ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ १८ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ १९ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २० ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २१ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २२ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २३ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २४ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २५ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २६ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २७ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २८ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ २९ ॥  
 गी गी गी गी गी गी गी गी गी गी ॥ ३० ॥

के छट्यो इहि जाल परि, कत कुम्ह अकुलात ।  
 ज्यों-ज्यों सुरभि भज्यो चाहत, त्यों-त्यों उरमत जात ॥ २१ ॥  
 कर लै सैंधि सराहि कै, रहै सबै गहि मौन ।  
 गन्धी, गन्ध गुलाब के गँवई गाहक कौन ॥ २२ ॥  
 वै न यहां नागर बड़े, जिन आदर तो आव ।  
 फूल्यो अनफूल्यो भयो, गँवई गाँव गुलाब ॥ २३ ॥  
 जदपि पुराने बक तऊ, सरवर निपट कुचाल ।  
 नये भये तो कह भयो, ए मनहरन मराल ॥ २४ ॥  
 दिन दूग आदर पाव कै करिलै आपु बखान ।  
 जौलौ पाग सराध-पग, तौलौ तो सनमान ॥ २५ ॥  
 मरन प्याम पिजरा परगो मुखा समय के फेर ।  
 आदर दै-दै पालियत पायम घलि की वेर ॥ २६ ॥  
 चले जाहु त्यों को परत हाथिन बेग व्योपार ।  
 नहि जानत, या पुग समत धाँसी और कुम्हार ॥ २७ ॥  
 समै-समै मंदर मई, रूप-गुण न पोय ।  
 मन की रचि जेनी जिनै, निन तेनी रचि होय ॥ २८ ॥  
 जगत जनायो जेहि सफल सो हरि जान्यो नहि ।  
 जगो ओरिन सब देखिये, अंगिर न देखी जाति ॥ २९ ॥  
 जपनाला लापा तिलक मरै न एको वान ।  
 मन कोरे नाचै पृथा, सोचै रीचै रान ॥ ३० ॥  
 हो लनि या मन-मदन मे हरि आदैं बिहि पाट ।  
 पिबट जरै जौ लनि निपट गुलै न बपट-बपाट ॥ ३१ ॥  
 यह किरिया नहि और की, तू करिया बह मोधि ।  
 पाहन-नाद पड़ाव जिन बीन्हे पार पयोधि ॥ ३२ ॥

भजन कसो तासों भज्यो, भज्यो न एकौ बार ।  
 दूर भजन जासों कसो सो तू भज्यो गेंवार ॥ ३३ ॥  
 पतवारी-भाला पकरि, और न आन उपाय ।  
 नहि संसार-पयोधि को, हरि-नामै करि नाव ॥ ३४ ॥  
 मून, मोहन सो मोह करि, तू धनस्याम निहारि ।  
 कुंजविहारी मां विहरि, निरिधारी उर धारि ॥ ३५ ॥  
 दीग्य मांस न लेइ दुग्ग, सुग्ग माई नहि मूढ ।  
 दई-दई क्यो कसत है, दई-दई गुकबूढ ॥ ३६ ॥  
 नोकी दई अनादनी, खीची परी गुहारि ।  
 मनां नभ्यो गारन विरद, बारक बारन तारि ॥ ३७ ॥  
 जोरई गुन गंमने, चिमराई बह बानि ।  
 नुमन कन्ह भय मना आन-काजि के गनि ॥ ३८ ॥  
 दय का दान रैन द, दान न दुर्लभ महाय ।  
 नुमन गला न, नगन न, नाना न, नाना-बाय ॥ ३९ ॥  
 दाउ दाउिक मयई, दाउ गमन न बार ।  
 मा मयनि न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४० ॥  
 या दई का दान न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ।  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४१ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४२ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४३ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४४ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४५ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४६ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४७ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४८ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ४९ ॥  
 नाना न, नाना न, नाना न, नाना-बाय ॥ ५० ॥

मोहि गुह्यें दादा बटम, बो जानै जटुराज।  
 जावने-अपने दिग्द की दूटैन निवाहन लाज ॥४४॥

१६—ऋषपति शिवाजी

[ १५३—१६४ ]

४ निम्न

२२ जिमि जंभ पर, धाद्व सु जंभ पर,  
गवत वदंभ पर वधुक् न-गज ह ।

दोन दारिद्र्याद पर, संशु रतिनाद पर,  
 दो अहम्यदाद पर नाम द्विजगज है ॥

सादा भूभट्ट पर, श्रीता भूभट्ट पर,  
भूभट्ट दिगुण्ड पर यैसं भूभट्ट नै ।

मन्त्रः तद्विषयः परः, यान्ति विधिः वसन्तः परः,  
यन्त्रादिना यन्त्रपरमेव सिद्धयति ॥ १ ॥

10

॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
॥ श्री गणेशाय नमः ॥



भूपन जहान हिन्दुआन के उबारिबे को,  
 तुगकान मारिबे को वीर बरकत है ।  
 माहिन सो हरिबे की चरचा चलति आनि,  
 मरजाह के दगन उड़ाइ छलकत है ॥ २ ॥

ॐ

रागी हिन्दुवानो, हिन्दुवानको निलक राख्यो,  
 अमृति<sup>१</sup> पुरान राखे बेदविधि सुनी मैं ।  
 राखी रत्नपूनी राजधानी राखी राजन की,  
 धरामे धरम राख्यो, राख्यो गुन गुनी मैं ॥  
 भूपन मुकवि जानि हर मरहदून को,  
 देम-देम कीरति बगानी तब सुनी मैं ।  
 मादि के सपूत मिशराज सममेर नेरी,  
 जिम्मी दल दापिकें दिखाल गम्भीरुनी मैं ॥ ३ ॥

ॐ

इह राज्य विजित, पुरान राखे सायकन,  
 राम नाम राखे<sup>२</sup> अति रमन सुख में ।  
 हिन्दुन की चोटी, गरी गरी है अपाजित की,  
 काँवे में जनक राख्यो, माया गरी गर में ॥  
 मा'द राज्य सुगन, मरोदि राखे पानभाज,  
 बेरी पामि राखे, बरकत राख्यो कर में ।  
 इ मन की इह राखा नेम-वन मिशगन,  
 देव राखे देवद, मराम राख्यो वर में ॥ ४ ॥

१ अमृति नाम अमृत परमेश्वर की, जिसका अरथ है परमात्मा है।  
 २ राम नाम है, जो है ।

३ अमृत ब्रह्म, जो है ।

मराजि चतुरंग घोर-रंग में तुरंग चढ़ि,  
 मरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है ।  
 भूपन भनत नाद विह्वल नगरन के,  
 नदी नदमद गन्धवन के बनत है ॥  
 पैल-पैल मेल-मेल बलक में मेल-मेल,  
 गजन पी ठेल-पेल गैल समलत है ।  
 तारा गों मरनि धुरि-भारा में लगत जिति,  
 शान पर पारा पारावार गों हलत है ॥ ५ ॥

५६

धित्त लाग्यैन, आंगू लगत गैन, देखि,  
 बीसी घटै रैन, मियो ! बतियत दाहिने ।  
 भूपन भनत घूमे, आये दरबार मे,  
 बैपत लाग्यार क्यों बेभार तन ताहिने ॥  
 गोंगो धवधवल, पगीनो जग्यो दैद गद,  
 हीनो भयो भूष न भितौन धामे दाहिने,  
 मिठाभी पीस्ये गान गये हो मरतय, तुमने  
 जानियत मरियन को मुखा ! व लेखाहिने । ५७

५८

भाते धरि दातभाते वतवरात ५८ भाते जिना,  
 नर बीनो नर वतवरे दैद मर कहे द,  
 मिठित मर रोमो पिठित मर मरलहे मर  
 मिठित मर मिठित मरलहे मर मर मर दै ।  
 मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे,  
 मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे,  
 मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे मरलहे





पंजन पेलि मल्लिच्छ मन्वो सब सोई बच्यो जेहि दीन है माख्यो  
सौ रंग है सिवराज बली, जेहि नौरंग में रंग एक न राख्यो ॥१४

ॐ

यो कवि भूपन भाषन है, इक लो पहिले कलि काल को सैली  
ता पर हिंदुन की सब राहन नौरंग साह फरी अनि मैरी  
साहि-तनै मित्र के डर सों नुरखी गहि वारिधि की गति पैली  
बेद-पुरातन की परचा, अरथा दिज देवन की फिरि कैरी ॥१५

ॐ

दीन दयाल, दुनी-प्रतिपालक, जे करता निरम्लेन्द्र मही के  
भूपन भूधर उद्धरिषो सुनं आर जिते गन ते सबजी के  
या कलि में अवतार लिया, तऊ नेई सुभाय सिवाजी बली के  
आय धर्यो हरि ते नर रूप, पै काज करै मितरे हरि ही के ॥१६

ॐ

तो कर मो दिनि लाजन दान है दानदु मो अनि तो कर छाजै  
नै ही गुनी का बहाई मजै अर नेरी बहाई गुनी सब साजै  
भूपन ताहि मो गज विराजन, गज सों नू सिवराज विराजै  
तो बज मो गद फांट गन अर नू गद काटन के बज गाजै ॥१७

ॐ

एक कहै बतपत्रम है इमि पूजन है सब की चित चाहै  
एक कहै अवतार मनोज को, यो नन में अनि सुन्दरता है  
भूपन एक कहै माह इन्द्र यो, गज विराजन याह्यो महा है  
एक कहै नरसिंह है मगर एक कहै नरसिंह सिवा है ॥१८









दोहा

चक्रवर्तिन के बिन्ह सब, अंगन-अंगन राखि ।  
छत्र-धर्म जब ओतरपौ, सामुद्रिक<sup>१</sup> दे साखि ॥ ३ ॥

चौपाई

जनम्यो पुत्र उठी यह बानी । धन्य घरी सब हो बड़ भारी ॥  
हुन्दुभि बजै लोक सुरदासी । आठो दिसा प्रसन्न दिखानी ॥  
जात-कर्म कीन्हें सुखमूले । अमर पितर नर हर अति पूजे ॥  
वसैनि भरे नरनारी गावैं । पिता तुरंग नग कोष छुटावैं ॥  
मतकधि-बदन नचाँवर बानी । भिन्दुक-भौन लग्नमाँ रानी ॥  
कीरति नची जगन मनभाई । विमल जौन्हूमी छवि छिटकाई ॥  
दिरख्यौ छठी में सख नचाई । दान तूफ बर बूक पड़ाई ॥  
मन बरानुनि करम के कैये । जिन सम लगन तपी न पड़े ॥

दोहा

ईस नखन अनुरूप कर अखवन परिनाम ।  
ननम-पत्र नाते जिगौ, दूरमात्र यह नाम ॥ ४ ॥

चौपाई

प्रगट पासनी में लखि आइ । नुबनर माहित कृपान उठाई ॥  
धुनुन चलन धं धुन बानै । मिनिन मुनन इस हिय लाजै ॥  
गहि पलका को पाटी दानै । किराक = दसननि दुतिखोलै ॥  
बिहसन उठत मोर हो गरी । निरखत को न हिये अनुरागै ॥  
बलन तेन बि-दोना बाल । जावन किरकि छवि के पाव ॥  
बाँध सा तऊन तुग ज तीकै । बिहसन तेन भुतरा सबडो के ॥  
दिन-दिन बढ़ै बढ़ाई अनदा । जैस मुकल पन्छ को चढा ॥

१ सामुद्रिक उह 'बडा' है, जिसके द्वारा सभी घर के सिद्धों

कीर्तन माना जाता है













नैश्य नृप गुरु निय अनल, मध्य भाग जग भाहि ।  
 है विनाम अति निकट ते, दूर रहे फट नाहि ॥३॥  
 भले-चुरे सब एकसे जौलीं बोलत नाहि ।  
 जानि परत हें काक-पिक अतु दमन के नाहि ॥४॥  
 दुरं लगत मित्त के वचन, दिये दिचारी आप ।  
 पकयी भेषज दिन पिय मिट न तन की ताप ॥५॥  
 नयना देत बनाय सब दिय को देत अदेत ।  
 जैसे निर्मल आरमी भली-चुरी कहि देत ॥६॥  
 पेरि न होई फट नों जो बोज ध्यौपार ।  
 जैसे हाँड़ी काठ की चढ़ति न दूजी बार ॥७॥  
 ओछे नर की प्रीति को दीनी नीति बनाय ।  
 जैसे छालर ताल जल पटत-पटत घटि जाय ॥८॥  
 विद्या धन उदम विना कहीं जु पायै फौन ।  
 दिना गुलाबे ना मित्री री पंखा की पौन ॥९॥  
 रहे समीप पढ़ेन के होन पढ़े तित मेल ।  
 सब ही जानत पढ़त है दृष्ट बगबर धन ॥१०॥  
 पिसुन-छाल्यो नर गुजनमो परत दिसासन चूषि ।  
 जैसे दायाँ दूध को पीवत छाँटि पंषि ॥११॥  
 बने छुराई मुख परे, जैसे पारे कोइ ।  
 जैसे विरदा आप को जान रहा ते होइ ॥१२॥  
 साथ नल निगम को नीति-निगुन को होइ ।  
 गालत दिन को बने, जोर नीर को होइ ॥१३॥  
 परत परत अन्तमते लक्ष्मि होत सुख ।  
 समीप आस-आस में मित्र पर परत निगुन ॥१४॥





दीपो अवसर को भलो जामों मुधरै काम ।  
 मेली-सूये घरसियो घन को कौन काम ॥२७॥  
 अपनी पहुँच विचारि कै करतव करिए दौर ।  
 तेत पौव पमारिये जेतो लौंकी सौर ॥२८॥  
 कैसे निवहै निवह जन करि सवलन में गैर ।  
 जैसे घसि मागर धिपे करत मगर में बैर ॥२९॥  
 जाही ते कछु पाइये करिये तार्की आस ।  
 गीत सरवर प गये कैम युभति पियास ॥३०॥  
 अति परचै ते होत है अगुचि अनादर भाय ।  
 मलयागिरि की भालनी चंदन दंत जराय ॥३१॥  
 रस अनरस समुगै न कछु पदे प्रेम की गाय ।  
 सीत मंत्र न जानही साँप पिटारै हाथ ॥३२॥  
 जो पावै अति उच्च पद ताको पतन निदान ।  
 अ्यों तपि-तपि मध्यान्ह लौं अस्त होत है भान ॥३३॥  
 बहुत निषल मिलि बल करै कौं जु चाहै मोय ।  
 दिनवन की रमरी करी, करी-निबंधन होय ॥३४॥  
 बारज धीरे होत है, बाढ़े होतु अधीर ?  
 समय पाय नगवर पालै, बेतक सीचौ नीर ॥३५॥  
 जे चेतन ते क्यों तज जाको जासो मोह ।  
 गुंथक के पीछे लग्यो पितर अचेतन लोह ॥३६॥  
 गुरुर गुन समगो, नहीं नी न गुनी मे चूक ।  
 कहा पल्यो दिन का दिमा, देखै जो न चटक ॥३७॥  
 जूबा बंले होतु है गुन संपति का ज्ञान ।  
 राज बाज नल ते हृदयो, पाँदव बिय दनवान ॥३८॥















बिना बिचारें जो करै सो पावै पछिनाय ।  
 काज बिगारै आपनो, जग में होति हँसाय ॥  
 जग में होति हँसाय, चित्त में चैन न पावै ।  
 स्थान पान मनमान राग रंग मनहि न भावै ॥  
 कह गिरिधर कबिनाथ दुख कहु दरत न टारै ।  
 अदरत है त्रिष मादि, कियो जो बिना बिचारै ॥ १२ ॥

## २३-भंगा-गुण-गान

[ पञ्चाङ्ग—सं० १८१००००००० ]

गान

दूरम पै कोऊ, कोऊ पै गेय-कुंडली है,  
 कुंडली पै कवी केउ मुकुट हज्जार की ।  
 बड़े पदमाकर लो कज वै कवी है भूमि,  
 भूमि पै कवी है विनि रजत-वहार की ॥  
 रजत-वहार का मनु मृन्मय है,  
 मनु का नाभि जटा-बूट है अपार की ।  
 नाभि जटा-बूटन वै धर की छुरी है हरा,  
 धर की छुरीन वै छुरी है लग-बार की ॥ १ ॥

२३

रेम न न मारा कह नकर बगल हुआ,  
 म म न न मारा कह नकर न बगल ।  
 बड़े पदमाकर नकर न वीर नो,  
 नकर नकर नकर नकर नकर नकर ॥











बांधे जटा-झूट बैठि परवन कूट मारि,  
 महा काळझूट कही कैसे कै ठहरातो ?  
 पावै नित भंगै, रटै प्रेतन के संगै तेसै  
 पूरनो हो नौ जो न गंगै सोम धरतो ॥१०॥



सुधं भये जे हैं नर गंगा के अन्हाइये को  
 कामी बदनामी भामी कैयक करोर हैं ।  
 कहे पद्माकरन्यो तिनछो अवाइन के  
 माचि रहे जोर सुरलोचन में मोर हैं ॥  
 बार-बार हाटसी लगाये लरै पाट-पाट,  
 बाट हों तीर में कनेपौ तन बोर हैं ।  
 एक ओर गङ्गा, मुन्स एक ओर ठाढ़े,  
 एक ओर आदिश विमान एक ओर हैं ॥११॥



गङ्गा न भागम, विद्याम मे, मंथागम  
 गङ्गा म, रम मे न नका विमगाइये ।  
 कहे पद्माकर पुरा म पुन्य, गौरव मे,  
 है न म कै अर्जुनि गैलन मे गाइये ॥  
 बागम, रन्तु मे, विद्यामे यमवाहनमे,  
 विद्या मे रन्तु मे बडा-जडा चाइये ।

कृष्ण । म स्नान करनमाये के निय, उमके परत समय, विष्णु के  
 गङ्गा, ब्रह्मन इ, गङ्गा न नदी ओर इन्दी न विद्यान भवा, वत्येक देवता  
 को ध्याने लोक न गङ्गा आदता है ।













भूलै जीवन के न मद, अरी बावरी धाम !  
 यह नैहर दिन दोष को, अन्त कंत तें काम ॥  
 अन्त कंत तें काम, तंत सब ही तजि दै री ।  
 जाने रोमै नाह, नेह नव ताते फेरी ॥  
 बरनै दीनदयाल, भूखि भूखन अनुरही ।  
 चलि पिय-मेह, सनेह साजि, लखि देह न भूने ॥११॥

( छोरी )

एरं मेरं घोषिया, तोमों भापन टेरि ।  
 मेरा धोनी घोष है, मैना होय न फेरि ॥  
 मैना होय न फेरि, चीर यदि नीर न आवै ॥  
 मायुन लाउ विचारि, मैल जाने छुटि जावै ॥  
 बरनै दीनदयाल, रग चढ़िहै चढ़ुं फेरें ।  
 जों तू दैहै घोष, भले जल रुतल हों ॥१२॥

( कमल )

हमारे हैं कज फेसि चचरीक तुम मारि ।  
 बाका नीके गम्भीर दुखिन कीजिण नहि ॥  
 दुखिन कीजिण नहि, दीजिण हम धरि आगे ।  
 मयं राखें हन मयै इन सौगभ न्यागे ।  
 बरनै दीनदयाल प्रेम को पैदा न्यारो ।  
 बाजत हैं यों मिनिट दार को बेनिहारो ॥१३॥

शेखरी ,

न न देख नख न तु धमै प्रेम काग खाल  
 न न देख न नख न तु धमै प्रेम काग खाल ॥





कबहुँ होत सतचंद, कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत ।  
 पवनगवन-वस विम्बरूप जल में बहु साजत ॥  
 मनु ससि भरि अनुराग जमुन-जल लोटत डोलै ।  
 कै तरंग की डोर हिंडोरन करति कलोलै ॥  
 कै बाल गुड़ी नभ में उड़ी, सोहति इत-उत धावती ।  
 कै अवगाहत डोलत कोऊ व्रज-रमनी जल आवती ॥६॥



मनु जुग पच्छ प्रतच्छ होत मिटि जात जमुन जल ।  
 कै तारागन ठगन लुफत प्रगटत ससि अविकल ॥  
 कै कालिन्दी-नोर तरंग जिती उपजावत ।  
 नितनोंहों धरि रूप मिलन-हित तासों धावत ॥  
 कै बहुत रजत चकई चलति, कै फुहार-जल उच्छरत ।  
 कै निसिपति-मल्ल अनेक विधि, उटि, बैठत, कमरत करत ॥७॥



कूजत कहुँ कल' हंस, कहुँ मज्जत पारावत ।  
 कहुँ कारंडव उड़त, कहुँ जल कुक्कुट धावत ॥  
 चक्रवाक कहुँ घसत, कहुँ घक ध्यान लगायत ।  
 सुक पिक जल कहुँ पियत, कहुँ भ्रमरावलि गावत ॥  
 कहुँ तट पर नाचत मोर घट्ट, रोर विविध पच्छी करत ।  
 जलपान न्दान करि मुख-भरे तट-सोभा मथ जिय धरत ॥८॥



कहुँ बालुका विमल सकल कोमल बहु छाई ।  
 नज्जल मलकत रजत सिंदी मनु मास सुझाई ॥  
 पियके आगम-हेत पाँवड़े मनहुँ विधाये ।  
 रत्न-रासि करि चूर फूल पै मनु धरायें ॥





मच-भरी नर खोपरी सो ससि को नव विंभु धाइ गहो है ।  
 है बलि जीव पसू यह मत्त है काल-कपालिक नाचि रहो है ॥३॥



सूरज धूम बिना को चिता, सोइ अंत में लै जल माहिं बहाई ।  
 बोलैं घने तरु धैठि बिहंगम, रोवत सो मनु लोग लुगाई ॥  
 धूम अंधार, कपाल निसाकर, हाइ नद्धत्र, लहूसी ललाई ।  
 आनंद हेतु निसाचर के यह काल मसान सी सांन घनाई ॥४॥

छप्पय

रुग्ग्या चहुँ दिसि ररत, डरत मुनिकै नर-नारी ।  
 फटफटाय दोउ पंख बलकहु रदत पुकारी ॥  
 अंधकार-बस गिरत काक अरु चील्ह करत ख ।  
 गिद्ध, गरुड़, हड़गिल्ल भजत लखि निकट भयद दब ॥  
 रोवत त्रियार, नरजत नदी, न्वान भूँकि डरपावई ।  
 सँग दादुर-भींगुर-रदन-धुनि मिलि स्वर तुमुल मचावई ॥५॥

( सत्य हरिश्चन्द्र नाटक )

## ( ३ ) प्रेम-प्रलाप

पद

अहो हरि, यस, थय बहुत भई ।

अपनी दिनि बिलोकि करुनानिधि कीजै नाहिं नई ॥  
 जो हमरे दोषन को देखौ, तौ न निवाह हमारे ।  
 करि कै नुरत प्रजामिल, गज को हमरे करम दिमारे ॥

# हिन्दी-यंग-रत्नावली

अब नहिं सही जानि कोऊ विधि, धीर सकन नहिं धारि  
हरीचंद को बेगि धाड़के भुज भरि लेटु कपारी।

५

पियारे, याको नांव नियाव ?

तो ताहि भजै ताहि नहि भजनो कीनों भनों बनाव ॥  
थिन कलु दिये जानि अपनो जन दूनों दुख तेहि देनो ।  
भरी नइ यह रीति पसाइ, ऊठो अवगुन लेनो ॥  
हरीचंद यह भनो नियरो होरै अंगरजामी।  
पारन होइ होइ कै रांटी इननो जन को ग्यामी ॥ २

५

ममारा अंगन का गिरि शरी ।

माइ मुकुट मिह पगल बन ममि नामहु अदर ममारी ॥  
पुत्र नवन बनधर ॥ १ ॥ ममारा नाम उतारी ।  
वनीरिजन ममारा ॥ २ ॥ ममारा नाम निवारी ॥  
पुत्र नवन बनधर ॥ ३ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ४ ॥ ममारा नाम निवारी ॥  
पुत्र नवन बनधर ॥ ५ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ६ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ७ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ८ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ९ ॥ ममारा नाम निवारी ।

५

ममारा अंगन का गिरि शरी ।

माइ मुकुट मिह पगल बन ममि नामहु अदर ममारी ॥  
पुत्र नवन बनधर ॥ १ ॥ ममारा नाम उतारी ।  
वनीरिजन ममारा ॥ २ ॥ ममारा नाम निवारी ॥  
पुत्र नवन बनधर ॥ ३ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ४ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ५ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ६ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ७ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ८ ॥ ममारा नाम निवारी ।  
पुत्र नवन बनधर ॥ ९ ॥ ममारा नाम निवारी ।









जियत रहैं महाराज सदा जो हम ऐत्यन का पालति हैं ।  
नाहीं तो अब कोधो पृछै कंहि कं कौन कान के हन ॥ ४ ॥

( ३ ) कुछकर पद

साधो, मनुवा अजब दिवाना ।

माया मोह जनम के ठगिया, तिन के रूप लुभाना ॥  
छल परपंच करत जग धृतत, दुख को सुख करि माना ।  
फिकिर तहां की ननिक नहीं है, अंत समय जहैं जाना ॥  
मुखते धरम-धरम गोहरावन, करम करत मन-भाना ।  
जा साह्य घट-घट की जानै, तेहि ते कन्त बहाना ॥  
तेहि ते पृथक् मारग घर को आपहि जौन बुलाना ।  
'दियां कहां सज्जन कर याता,' दाय न इतनौ जाना ॥  
यहि मनुवा के पाछे चलि कं सुख का कहां ठिकाना ।  
जो परताप राम के चीन्है मोह परन लगाना ॥ १ ॥



जागो भाई, जागो रात अब धोर

काल-चोर नाह करन चहन ह जावन-धन की चोर ॥  
औसर चुके फिर पहिनेही टाव मीजि मिर फोर ॥  
काम करा, नहि काम न हैं घातें फोरों-फोर ॥  
जो कह्यो योता योत चुकी मो चिना ते सुख मोरा ।  
आगे जामे वसे मो कोज, करि नननन ह्व टोर ॥  
फाड़ का का नहि मार्य मान बिना नुह गोर ॥  
अपने करम आपन बना, जोर मोदना भोर ॥





बौध बाप की पाग बना मुन्धिया घर का मैं ।

केवल परमाधार रहा कुन्हे भर का मैं ॥

मुख से पहिली भौति निरंकुरा रहता था मैं ।

क्या करता है कौन, न कुछ भी कहता था मैं ॥ ५ ॥

.. जिनका संचित कोश खिलाया-खाया मैंने ।

करके उनका होड़ न द्रव्य कमाया मैंने ॥

लट रहे थे लोग, न द्रव्य पहचाना मैंने ।

घाटे का परिणाम कठोर न जाना मैंने ॥ ६ ॥

बिगाड़ चाकर चोर पुराने घान बिगाड़ी ।

दिया दिवाना काढ़, यनी दूकान बिगाड़ी ।

आये दाम चुकाय बटों का घात बिगाड़ी ।

.. मुक्त से किया बिगाड़, न अपनी घात बिगाड़ी ॥ ७ ॥

अदके डिगरीदार, किसी ने दाम न छोड़े ।

छोन लिये धन-धाम-धाम, आराम न छोड़े ॥

हाय ! किसी के पाम विभूषण-वस्त्र न छोड़े ।

नाम रहा निरुपाधि, पुष्टि ने राक्ष न छोड़े ॥ ८ ॥

न्यायानय में जाय दरिद्र कहाय चुका हूँ ।

भव देकर 'इनतालबेट' पद पाय चुका हूँ ॥

अपने घर की आप विभूति उड़ाय चुका हूँ ।

सर्वनाश से हाथ न पिठ छुड़ाय चुका हूँ ॥ ९ ॥

बैठ रहे मुख मोड़ पुगने आनेवाले ।

मैंने नहीं प्रमान लट कर गानेवाले ॥

देंते हैं दुर्वाट बड़ाई करनेवाले ।

लड़ते हैं बिन बर बर पर नगनेवाले ॥ १० ॥

## हिन्दी गद्य-रत्नावली

अविनाशेवो लोका न अथ 'म-कवि' कहने हैं ।

हा 'म' विज्ञान-गगन का गी कहने हैं ॥

यम-पुत्र भी नदी मुदगन कहने हैं ।

मुक्त का मय जगाद भना-निर्भन कहने हैं ॥ ११३ ॥

बैरागिनी विद्या विद्या विद्या विद्या है ।

मन मन निरर्थक मही नगरीय हुआ है ।

जगाती का मय पद्म, मय मय हुआ है ।

हीन का मय हाथ विधाता 'मय' हुआ है ॥ ११४ ॥

रचना का प्रभाव प्रत्यक्ष शक्ति युक्त है ।

प्राप्त का अस्मान विद्याय पद्माय युक्त है ।

॥ ११५ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव युक्त है ।

॥ ११६ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव युक्त है ॥ ११७ ॥

॥ ११८ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ ११९ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ १२० ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ १२१ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ १२२ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ १२३ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ १२४ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ १२५ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ १२६ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

॥ १२७ ॥ 'म' नाव निरर्थक नाव है ।

















रसमय बचनों से नाथ ! जो सर्वदा हो  
 मम-सदन बहाता स्वर्ग-मंशकनी पा।  
 भ्रुवि-पुट टपकता रस जो था मुधा की,  
 वह नव मनि न्यारी मंजुना की कहाँ है ? ॥ १

मधु-जलज का है जो समुत्पुष्ट-सर्ग,  
 मम परम निराशा-श्यामिनी का विनयो।  
 मत्त-जन्म-विहंगों के वृन्द का मोद-दाता,  
 वह दिनकर-शोभी राम-भाना कहाँ है ? ॥ २

मृग्य पर तिमिरे हे मौन्यता रंगनी सी,  
 अनुपम तिमका है शीत सौजन्य पादी।  
 पर-दुग्ध मय के है जो ममुद्रित होना,  
 वह मर-रूपने का मन्त्र माता कहाँ है ? ॥ ३

रह-निमित्त निगमा का समार्पण जो था,  
 निज मृग्य दुनि में है जो जम ध्वमकारी।  
 लक्ष्य पर नममें है कामिनी-जगम मंग,  
 वह लोचकर चित्रा का चिन्ता कहाँ है ? ॥ ४

रह-का चित्त ही वस्तु श्री मकरों की,  
 बहु यजन कहाँ पूज क निर्जरा की।  
 'ह मुजब मिश्र है ना मुन्द मम-दाग  
 'अथनम वर मंग कथा 'पारा कहाँ है ? ॥ ५

मोद-कला ना मय का था दुहा-मा,  
 रह-का कला था जो मगो-मा बनो में।  
 मधु-विहंगों ना कटिका का बनाता,  
 वह कल-कला कला का विधाना कहाँ है ? ॥ ६



## ३२—तुलसी-पंचक

तत्त्वप्रदाय 'रत्नावली'—सं. १६२३-नवंबर ]

६८५५

हृदय-कमल हृद घारि घर्म घुव मंजुल मंदर ।  
 अनि अनन विरहाम बाधुको वाम मुखार ।  
 बटु बिधि नरुं बिनरुं सुरामुर करि सहकार ।  
 आगम निगम पुरान सिधु मधि सुधा निहार ।  
 मुभ छंद प्रबंधनि बाधि बैद्य अजर अमर तासो मरुषो  
 इमि तुलसी-राम ललाम यह रामपरिज-मानम कण्ठो ।

५६

भावा जगत प्रदाम पुनि जगता नम माधवौ ।  
 बलि जुलि बटु रग बनेत्र बने विमल बिहारी ।  
 रमिक मरिदनि राज बधिर रम वान छवारी ।  
 कपटो हृद उदक इन्द करि मूक बहारी ॥  
 यदि 'नगन मगन मूक' अथ धार पार मार मार ।  
 मंगलमनस्य बी अनि अमन कन इतिता मरिता मरिता ॥३१॥

५७

विमल विमल बर राम-बिरत मानम अन्दरारी ।  
 अनद्वय बने मंद मुनूयन बसत पगारी ।  
 मूर भाव मुध मुमन कामना शिखि पूव परि ।  
 मंगल कन रम बधिर रमि मरद अरिण करि ।  
 बटु 'मूक' अथ मनि रग मा रम'ग रमारी आरनी ।  
 मंगल मंगलम मंगल मंगल विर विर वारी वारी ॥३१॥

५८



















जिन पराग मां चौंकि भ्रमत उत्सुकता-प्रेरे,  
रहसि-रहसि रसस्थानि रतिक अलि गुंज घनेरे ।  
बरन-बरन में मोहन की प्रतिमूर्ति विराजति,  
अच्छर आभा जासु अलौकिक अद्भुत आजति ॥ ८ ॥

सुस्र पद धरन सुभाव विविध रसमय प्रति उत्तम;  
शुद्ध संस्कृत सुखद आत्मजा अभिनव अनुपम ।  
देस-काल-अनुसार भाव निज व्यक्त करन में,  
मंजु मनोहर भाषा या सम कौन न जग में ॥ ९ ॥

ईश्वर-मानव प्रेम दोउ इकसंग सिखावति;  
उज्जल स्यामल धार जुगल यों जोरि मिलावति ।  
भेद-भाव तजिये की प्रतिभा जब रस-पेनी,  
योग गहत तिनसों तब मुन्दर वहति त्रिवेनी ॥ १० ॥

करी जाय यदि जासु परीच्छा सविधि जयारथ,  
वाही में सब जग कौ स्वारथ अरु परमारथ ।  
वरनन का करि सकै भला तिह भाषा-कोटी,  
मचलि-मचलि मांगी जामें हरि माखन-रोटी ? ॥ ११ ॥

जाकौ जो रस अवगाहत जाही में आवैं ।  
कैसो हूँ गुनवान थाह जाकी नहि पावैं ॥  
रहौ यही अवसेस एक आरज-जीवनधन,  
चिंतनीय यह विषय तुमनु सों सब सज्जन-गन ॥ १२ ॥

बंग और महाराष्ट्र, सुगम गुजरात देस में,  
थटक कटक पर्यन्त कहिय भारत असेस में ।  
एक राष्ट्र-भाषा की त्रुटि जो पूरत आई,  
इतने दिन सों करव रही तुहरी सिक्काई ॥ १३ ॥



सुवन्देया-हित तामु गचि गचि गच्छति सुदाही ।  
 जनमें पून कुपूत, कुमाना माना नाहीं ॥१९॥  
 जाय फहां अथ, वनहि तुम्हें चहि पाले-पोसे ।  
 याही चल याही जावन बस थाप भरोसे;  
 निरालंघ यह अंध, याहि अवलंघनु कीजे;  
 ननसों, मनसों, धनसों याही रच्छा कीजे ॥२०॥  
 यही गृहि जननों की केवल निन अभिलाषा—  
 'भक्त होहि तुव भवै उच्च उन्नत प्रिय आशा !  
 भक्त और अभ्युदय-मूर्त्य की किरन प्रकाश !  
 नमहि अविधारैनि, ज्ञान-भय-कमल त्रिकुसं ॥२१॥  
 'जागृति त्रिविध यथारि वमन्ती नित सरसावै !  
 निरमल पर उपकार हृदय मधि लहरि मुहावै !  
 मोहें मुज्जन रमाल, प्रेम-मंजरि चहुँ छावै !  
 निज-भाषा-कचि-लता अङ्क लहि परम मुदावै ॥२२॥  
 'कवि-कोकिल सत्काव्य-कृक अपनी उचारै !  
 गुनि गुन-गाहक रसिक भ्रमर मंजुल गुंजारै !  
 जगमगाय जातीय प्रेम, सुघरै चरित्र-चल ;  
 सबके हों आदर्श उच्च, उत्तम अरु उज्ज्वल ! २३॥  
 'विद्या-विनय विवंक प्रकृति-छवि मनहि लुभावै !  
 दुख को हों बस अन्न, दैम भारत सुख प्रावै !  
 परब्रह्म परमात्मन घट-घट अन्तरजामी,  
 पूरहि यह अभिलाष सत्य नारायण स्वामी ! २४॥

(हृदय-नरंग)

\* कुपुत्री जायत क्वचिदपि कुमाना न भवति—श्रीशंकराचार्य ।







विषधर बनेगा रोष मेरा सल ! तुम्हें पाताल में,  
 दावान्नि होगा विपिन में, बाइव जलधि-जल-जाल में।  
 जो व्योम में तू जायगा तो बस वह बन जायगा,  
 बाहे जहाँ जा कर रहे जीविन न तू रह पायगा ॥१४४॥

छोटे-बड़े जितने जगन में पुण्य नाराक पाप हैं,  
 लौकिक तथा जो पारलौकिक सोक्ष्णतर मनाप हैं।  
 हों प्रातः के मघ सर्वदा को तो विलम्ब बिना मुझे,  
 कजयुद्ध में संध्या-समय तक, जो न मैं माहूँ तुम्हें ॥१४५॥

अथवा अधिक कहना क्या है, पार्थ का प्रण है यही,  
 माफी रहें मुन ये वचन रवि, राशि, अनल, अंबर, मही।  
 मर्यादा से पहले न जो मैं कल जयद्रथ-वध करूँ,  
 तो रावध करता हूँ, स्वयं मैं ही अनल में जल महें ॥१४६॥

( जयद्रथ-वध, मार्ग ३ )



# शब्दार्थ

## १—पञ्चावती-परिणय

- १—वर=हृदय, पेट, गर्भ । भान=भानु ।  
 २—वश्रिय=घनी हुई है । हीर=हीरा, यहां दाँतों से उपमा दी गयी है । कीर=तोता, यहाँ नाक से उपमा दी गयी है । विम्ब=विम्ब फल, अधरोष्ठ से उपमा दी गयी है । विह=उसे, विधाता । सचि=शची, इन्द्राणी ।  
 ४—चुष्टदृयो=लग गया, फँस गया । कुल्ल=प्रसन्न ।  
 ८—संभरि=सोंभर प्रांत ।  
 ९—बैसह=वयः, उम्र । यरीस=वर्ष ।  
 ११—पानीय=तंज, कान्ति ।  
 १२—कद्रूप=कामदेव ।  
 १३—सुरत्तह=प्रेम, लगन ।  
 १४—केली=प्रसन्न ।  
 १८—कगर=कागज, पत्र ।  
 १९—यंय=याजा ।  
 २०—सूक=शुक, तोता ।  
 २१—चिकट=मैला, कुचैला ।  
 २२—नवसत=सोलह ।  
 २४—सोत्रन्न=सुवर्ण ।  
 २५—जेम=जैसे ।  
 २६—गवरि=गौरी, पार्वती ।  
 २७—मुद्ध मुद्ध=धीरे धीरे ।  
 ३०—पलान=तैयार किये गये ।



- येदन=येदना. यष्ट ।
- मोफरी=मंग ।
- माल=भोजनी ।
- मिग=मिग्य ।
- नेटेने=भेद ।
- रेरह=भूत ।
- उपाधि=दुःख ।
- धनी=मानिक. ईश्वर । निवाज=रुपा करंगा ।
- मेदि रहना=टट जाना ।
- लंघना=भ्रम ।
- लान=प्यारा, ईश्वर । लाली देगन ... लाल=मल्लवेना ब्रह्म  
हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है । उपनिषद् में भी  
“मल्लविद् मल्लैव भवति” कहा गया है ।
- मोटी=वर्ती । बिना जीव की मांस=भोजनी ।
- मीदार=दर्शन ।
- मंचर=प्रवेश करता है । मालै=कष्ट पहुँचाना है ।
- गोटी=निकरमी । घाट=रास्ता ।
- पेट=हाट ।
- पला=पड़ा ।
- भ्रगु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शील  
की परीक्षा ली थी । ब्रह्मा और शिव तो इस परीक्षा में  
उत्तीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान् ऋषि की लान का आघात  
सह कर उलटे उनकी विनय करने लगे !
- इतराय=पेंछता है ।









२१—वेदन=वेदना, कष्ट ।

२३—सौकरी=तंग ।

२४—खाल=धोकनी ।

२८—सिख=शिष्य ।

२९—लेहेंडे=भंड ।

३०—ग्रेह=धूल ।

३२—उपाधि=दुःख ।

३३—धनी=मालिक, ईश्वर । निवाजइ=कृपा करेगा ।

३५—मैंदि रहना=ढट जाना ।

३६—लंघना=भूखा ।

३८—लाल=प्यारा, ईश्वर । लाली देखन ... लाल=ब्रह्मदेता ब्रह्म ही हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है । उपनिषद् में भी “ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति” कहा गया है ।

४०—मोटी=बड़ी । बिना जीव की मांस=धोकनी ।

४४—ग्रीदार=दर्शन ।

४६—संपरै=प्रवेश करता है । मालै=कष्ट पहुँचाना है ।

४८—रोटी=निषमो । दाट=रास्ता ।

५१—पैठ=हाट ।

५७—पला=पहा ।

६०—भगु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शील की परीक्षा ली थी । ब्रह्मा और शिव तो इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए, पर विष्णु भगवान् ऋषि की त्याग का आचरण यह कर उल्टे उनकी विनय करने लगे ।

६८—इतराव=पेटना है ।

३१—अंघ्रि=ललकार कर । मज्राह=कवच ।

३२—तत्ते=तच्छ ।

३३—बाग=घोड़े की लगाम । नाग=शेव ।

३५—धोन=रक्त ।

३७—रिनस्येन=रगुत्तरे । रण्य=रत्न ।

३९—धुर=मंदर । पती=पंक्ति । नालि=नली, बंदूक । हीरह=हीर ।  
मार=होहा, पक्ष । गजनेम=गजनी का वादराष्ट्र राधापुरीन  
गोरी ।

४०—धिही=चांगे । धोजु=धितनी । मूर=मूर्य । कौनिग=कौतुक ।  
रगन मगने=मराधार । लयपथ । धर=धृज्यी ।

४१—नह=न ।

४४—परिट्टिष्ठय=निष्ठित कर । हर बांसह=हरे बांस । गठिय=गठि  
बांध कर । किल्ल=किया । दहयां=दहिन किया, जुमाना  
आदि । दग्गा=दुग किया । दूचर=दूत ।

## ८—कबीरदास की सांग्रियाँ और शब्द

१—बननाम=बनाम ।

२—बनरा ३-बनराज बड़ा बगल पद समि=भ्याही ।

४—आदि न ल ५-ल न का नाम म द नाम ।

६—मिह=मिह ।

७—मिह=मिह ।

८—मिह=मिह ।

९—मिह=मिह ।

१०—मिह=मिह । मिह ही चार नागियों में एक है,  
'मिह' वह मिह न-द म बांसाय का बांध होता है ।

२१—वेदन=वेदना, कष्ट ।

२२—सौकरी=तंग ।

२४—खाल=धोकनी ।

२८—सिख=शिष्य ।

२९—लेहेंदं=भंड ।

३०—गैह=धूल ।

३२—उपाधि=दुःख ।

३३—धनी=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृपा करेगा ।

३५—मैंदि रहना=डट जाना ।

३६—लंघना=भ्रष्टा ।

३८—लाल=प्यारा, ईश्वर । लाली देखन . . . लाल=प्रसवेत्ता ब्रह्म  
ही हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है । उपेनिषद् में भी  
“ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति” कहा गया है ।

४०—मोटी=बटी । बिना जीव की मांस=भोकनी ।

४४—दीदार=दर्शन ।

४६—संचरै=प्रवेश करता है । माले=कष्ट पहुँचाता है ।

४८—गोटी=निकरमो । बाट=राम्पा ।

५१—पैठ=हाट ।

५५—पला=पला ।

६०—भगु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शील  
की परीक्षा ली थी । ब्रह्मा और शिव से इस परीक्षा में  
एकीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान् करिबी लाभ का कथन  
कर कर उलटे उनका विनय करने लगे ।

६८—दुतराद=रेटता है ।

३१—ऊँपि=ललकार कर । मझाह=कथय ।

३२—तत्ते=तैय ।

३३—वाग=घोड़े की लगाम । नाग=शेय ।

३५—धोन=रक्त ।

३७—रिनखेत=रणक्षेत्र । रूप=रुख ।

३९—धुर=मेघ । पत्तो=पंक्ति । नालि=नली, बंदूक । सीरह=सीर ।  
सार=लोहा, यज्ञ । गजनेस=गजनी का बादशाह शशपुरीन  
गोरो ।

४०—धिहौ=धारो । धोजु=धितली । मूर=मूर्य । कौनिग=कौतुक ।  
रगत मगत=मगधोर, लघपय । धर=पृथ्वी ।

४१—नह=न ।

४४—परिट्ठिय=निश्चित की । हर बांसह=हरे बांस । गठिय=गोठ  
बांध कर । किन्न=रिया । दहयो=दहित किया, जुमाना  
आदि लिया । दुग्गा=दुग किया । हुनर=दुनूर ।

७—कधीरदास की साम्बियों और शब्द

१—परनाम=प्रणाम ।

२—वनराज=वनगज बड़ा जगल पद । मामे=स्थाही ।

५—आदि नाम=परमा मा का नाम मय नाम ।

६—मिलि=पद ।

११—मनुषी=मन ।

१३—जरा=बुढ़ापा । मुद्र=मर्ग ।

१९—करु चांत=मन लगाने ।

२०—पदमिनी=पद्मिनी स्त्रियों की चार जातियों में से एक है  
किन्तु यही पद्मिनी शब्द में स्त्रीमात्र का बोध होता है ।  
उद्ग=गाँव ।

२१—वेदन=वेदना, कष्ट ।

२३—सौकरी=तंग ।

२४—खाल=भोकनी ।

२८—सिर=शिष्य ।

२९—लेहेंदं=मंड ।

३०—खेद=धूल ।

३२—उपाधि=दुःख ।

३३—धनी=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृपा करंगा ।

३५—मैंदि रहना=डट जाना ।

३६—लंघना=भूना ।

३८—लाल=प्यारा, ईश्वर । लाली देखन ... लाल=ब्रह्मदेता ब्रह्म ही हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है । उपनिषद् में भी “ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति” कहा गया है ।

४०—मोटी=बर्ती । बिना जीव की मांस=भोकनी ।

४४—मीश्वर=इश्वर ।

४६—संचरै=प्रवेश करता है । मालै=कष्ट पहुँचाना है ।

४८—रोटी=निकामी । बाट=रास्ता ।

५१—पैट=दाट ।

५३—पला=पड़ा ।

६०—भगु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के शील की परीक्षा ली थी । ब्रह्मा और शिव तो इस परीक्षा में उत्तीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान् ऋषि की आज्ञा का आचरण सब कर डाले उनकी विनय करने लगे ।

६८—दुगय=रोठना है ।

३९—जो मन पर असवार है=जिसने मन को बरामें कर लिया है।

४०—परतद्ध=प्रत्यक्ष । राक्षस=राक्षस ।

४१—सम्भिरत=सम्भृत । भाषा=हिंदी भाषा । सत=सत्य ।

४२—भीसन लागे=पड़ाने लगे, खीजने लगे ।

४३—प्रातम=परमात्मा से तात्पर्य है । मूनी=सो गई ।

४४—जूमता=लड़ता है । मेंडा=बड़ा है । घमसान=घोर रूप ।  
मूरमा=शूर । कायरों=कायरों को ।

४५—सयूरी=संतोष, धैर्य । सोटा=डंटा । मगरूरी=परमंज ।

४६—मानिक=यहां माणिक्य से परमात्मा का तात्पर्य है । अप न=  
अपना । धन=क्री । सयद=राश, नाम ।

४७—चाह=कामना । निरवासना=इच्छा-रहित । तत्त=तत्त्व, प्रज्ञा-  
ज्ञान । रत्न=अनुरक्त ।

४८—मिर्गा=भूमि। यहा महापि विभाडक के पुत्र थे । इन्होंने  
मालिक के को अग्रस्था तक किसी की का मुख तक नहीं  
दया था, किन्तु महागज गमपाद की भेंटों हुई बरखाओं  
ने इन्हें अपने रूप-लावण्य पर मोहित कर लपो भ्रष्ट कर  
दिया । पगामर=पगार शर वेदध्याम के पिता, यह भी एक  
की पर मृग्य हाकर अपनी नवअया से हाथ जो बैठ थे ।  
कनकेश=यागिया का एक भद्र । मादिक=मालिक, परमेश्वर ।  
रगना=माया से आभवाय है ।

### ३—बाल-भाषना

४९—नवनात=मकराने । गन्ध=बचल । गर=गड । माधुरी=  
मिठास । बख हाग से तात्पर्य है । कचिर=सुन्दर । एकी=  
एक ही ।

- २—अथराइ=लटपटा कर । दुहुँधा=दोनों ओर । घुटुगन=घुटनों के बल । महर=गोप, नंद से तात्पर्य है ।
- ३—गुड़ियों=पैर । मुनक-मुनक=गहनों के घजने का शब्द विशेष । मुखर=शब्दायमान । पिथरी=पीली । भीनी=रस-भरी, माँटो । चारो=छोटा बालक । ममिबिन्दु=काजल का दिठौना । अमम मर=पंचबाण-धारी कामदेव । घरनि=रही । मलदाबनि=खिलाना है । सुपर=चतुर । दंतुगिर्यो=छोटें-छोटें दाँत ।
- ४—रैगै=चलै । ररै=रटे, बार बार फटं । जोइ-मोइ=जो मन में आवे वही । एदि अंतर=हृत्तने बीच में । अंधवारि=आंधी ।
- ५—धौगै-मपेद रंग की गाय । दाइदि=बलभद्र को । व्यौलै=व्याह दुंगी । सौद=प्रसन्न ।
- ६—ओकि=अंजली । भलमलात=चमचमाता है, हिलता है । निपट=विरक्त । घरयो=गोकने पर भी । हौ=है । दौगन न वहीगो=भुलाया देने पर भी न भूलगा । दाप=दप, गर्व ।
- ७—मिभायो=नम किया । मिस=गुमरा । तातु=पिता । बलबांर=बलराम । अथाई=पुनरापार, मध्य द्वार की उपर लगाने वाला । भूत=भूत । सौ=सौगद । हौ=है ।
- ८—दंसीवट=एक स्थान, जहाँ पर श्रीकृष्ण बट दण्ड के नीचे खड़े होकर दली बजाते थे । सोन परे=स रा होने पर । लीबा=सीबा, सिंघार । नेद=बदल । कमरिया=बदल का होना या दुबरा ।
- ९—बलर दाराम । अंतलि=बड़ी बरतों है । अँ=अमोत । एदि एदि=होगे बार बार । ओगै=ओहो । क-दलि=नदारता है ।



- १०—घतैया=बलाय । खिझावत=तंग करने हैं । धिरयो=धमकी  
हो, डाँटा ।
- ११—टोटा=छड़का । गाड़े करि=मजबूती से । साँटी=झड़ी ।  
मुमेरु=देवताओं का पर्वत; यहाँ समस्त पर्वतों से अभिप्राय है ।  
मारैगवानी=हाथ में धनुष धारण करनेवाले विष्णु भगवान् ;  
यहाँ श्रीकृष्ण से तात्पर्य है ।
- १२—भैरवा=तोड़ट् । चक=चकरी । चारे पर=ठाक पर । पोरी=  
डबोड़ी । जेरी=जोड़ी । मोरी=मोड़कर । नून डारति तोरी=  
रात से तिनका दबाकर तोड़-तोड़ कर फैकती है, जिसमें  
कहीं नज़र न लग जाय ।
- १३—घारे=छोटे में बालक । तनिक तनिक=तन्हें तन्हें । चारन=  
चराने को । मकि=मे ।
- १४—कनिया=गोठ उड़ग । निझनिया=छातिस निजकपट ।  
कारन=लिये ।
- १५—चिगावन=चारों ओर घूमर नगवान है पशुओं को इकट्ठा  
कराते हैं । सौह=सौगड । बदगड=बहला कर । अति=झोटा  
मा । विगाड=वैदल बना कर ।

### ४—तुन्दायन-वाणन

- १—चिगवन=चैतन्यना का समूह परम दिव्य तम=पहाड़  
वांछ=पेड़ ।
- २—अविहङ्ग=चंगक टाक तिलमिनकर विभूति=ऐश्वर्य, प्रभा ।
- ३—मकपण=शय भगवान् ।
- ४—मारनन=मर्मनाथ विष्णु भगवान् । वानिक=झटा, शोभा.



उगदामा=विश्वामा, परब्रह्म । दारी=पार्ति । मंजुल=मरा-  
दुष्मा । महाग=तालाय । विधु=धन्तुमा । मयराय=चिरण ।

६—वाजिमेष=अश्वमेष यज्ञ । गुनातीत=निर्गुण । पुरंदर=ईश ।  
परिचरजः=परिचर्या, सेवा, काम-काज । उमा=पार्वती ।  
समनम्=भद्र । सुभाषदि स्वाद्=धंधलता छोड़कर, निरपल  
भाव में ।

\* — अहनिमि = दिनरात । गौरीत = इन्द्रिय-ज्ञान से परे । धार = परे ।

८—गङ्गा-समाप्ता ।

५.—मनकानि=मनक, मनंदन, मनामन और मनंशु कुमार, यह  
प्रथा के मान्यो पुत्र कहे जाते हैं । जानरूप=मुखर्ग । निरु=  
ममूह । अनीक=मेला । अमरावति=देवपुरी । शिरूम=भूगा ।  
मरकत=नीरम । आवन=पीटे, बंद । कटिक=अकटिक,  
विजौर । पुरट=मुखर्ग । वस=हारा ।

१—सुखः=आनन्दवान् । पागवन्=परेश, स्वामी । मायिका=  
मैत्रा । दीया=मण्डप । योहाट्ट=योगाट्ट ।

१-१५-११११ ॥ सावित्री, ५-३५ सावित्री, ११३-५६६६ ॥

1-4 4 4 4

१-४१'क अद्वैत 'न'र'दा दादा समृद्ध । अमनीनामनाने ।  
२-४२'क अद्वैत 'न'र'दा दादा समृद्ध । अमनीनामनाने ।

—मं गी त्वन्निर्वाह्ये च शिव-शरीरे । तस्यैव मया कृतं जनिमा-  
दकं यत्तस्मात् स एव साक्षिणो भूत्वा कुरुष्याद्दर्शनम् ।

### ६-समाप्ति-पत्र

१ - अथ क निरुद्ध इव प्रकाशः । अनेक मानो भवति ।  
आकाशः वायुश्च अक्षरं दृश्यते । अथ वायुः ।  
उमान् अक्षरं 'अक्षर' इति ।

२—जाल=समूह । लीलिवे कां=निगउने के लिये । वीथिका=मार्ग । भूरि=बहुत-से । धूमकेतु=पुच्छल तारे । उवारी=नंगी । सुरेसचाप=इंद्रधनुष । कलाप=समूह । सरि=नदी । जानुथान=राक्षस । प्रजारीहै=जलावेगा ।

३—धुवुक=हंककर । धुवुकारी=हुंकार, जोर जोर से रोना । निकेत=घर । भामिनी=स्त्री । छारा=छोकरा, बचा । महिष=भैंसा । वृषभ=बैल ।

४—नाद=शब्द । सविषाद=दुःख में । रावनो=रावण । मारनेड=मूर्य । वावनो=वामन, विष्णु का एक अवतार । आवनां=आना है । घामदेव=शिव । वादि=व्यर्थ ।

५—वरानी जानि हैं=भारी जाती हैं । मंशेवै=मंशेदरी; रावण की स्त्री । मीजि=मल कर । बापुगे=बेचाग । घालिहै=नट करेगा ।

६—डाढ़न=जलती हुई । केमरी-कुमार=केशरी बानर के पुत्र हनुमान । निलौ=एक निल भी । अगार=घर । डाढ़ो=जल गया । नुनियतु=काटते हैं, पा रहे हैं ।

७—धीज=दीट प्रप । मीज=सामान । श्रीज=पड़े में से उड़ेल कर, कमर में घबराकर । गादे=फण में । गाल की बजावनां=गव हाकना । सावनो=सावन महीने की मृमलधार घाँ ।

८—हाटक=माना । लाय=गरमी चलन । भाय=भाव, गति । पयमान=पवन वायु । जिवाये=भोजन कराया । गय=गया ।

९—विगत=मलानह । उपचार=इलाज । विमाक=गोकर्गित । आन=चैन । पामारा म कुल आराम । मनाह थाहा मा । नाय ऊ हा । रमायना रमायन विज्ञा की जाननवाला ।





४—सुवरनमई=खर्णमयी । पाय=पैर । गौन=गमन । बड़बोर=बलरामजी के भाई श्रीकृष्ण ।

६—पगा=पगड़ी । अंगा=कुरता । उपानह=जूता । सामा=साज, सामान । अभिराम=सुंदर ।

७—कलपद्रुम=स्वर्ग का एक वृक्ष, जो सब इन्द्रियों को पूर्ण कर देता है । खखेलो=गड़गड़ी, सोच विचार, चिंता । अंग=अंक ।

८—जोये=देने । इतै=यहाँ । परात=माल । नैनन के जल सों=आँसुओं से ।

९—तंदुल=चावल । तिय=म्हरी । हुये=अं ।

११—कॉय=बगल ।

१२—जीरन=जीर्ण, पुराना ।

१३—गोय=झिपा कर । घनीविधि सूत्र अग्न्या तरह से । पोड=पांछली । अछोट बड़ी । चामर चौकल । चाव=प्रेम ।

१४—हल कमक, गूल । हियग हृदय । बरहूँ काँपती है । थोक थोक मुण्ड के मुण्ड । हालो कप । अकिन में-चकचक-लियों में ।

१५—पावक एक पाव । सभा धान्य विंशय । कन पनि ।

१८—रकटि गरीय का ।

१९—विरवकर्मा देवताओं का शिष्या । णादे वैदल । ब्रव=ब्रवि ।

२०—जदुराय यादवों के राजा श्रीकृष्ण । भाय भाव ।

## १०—रत्निमन-सुधा

—जोर बल में ।

४—गोम यधन गाँठ, नोक रहस्य । निरम नोरम ।

५—डार=डाल । पात=पत्ते ।

६—दर-दर=द्वार-द्वार । मधुकरी=जैसे भौरा एक-एक फूल से थोड़ा-थोड़ा रस लेता है, उसी प्रकार एक-एक घर से थोड़ी-थोड़ी भिक्षा माँगना ।

८—दाव=आग ।

९—कमला=लक्ष्मी । पुरातन पुरुष=सनातन ब्रह्म, विष्णु भगवान् ।

१३—केर=केला । रस=आनन्द, मौज ।

१५—विपे=बोच में ।

१६—सजाय=सजा ।

१७—खून=हत्या ।

१८—भृगु=एक ऋषि; पाठ २, छन्दः ६० की टिप्पणी देखो ।

१९—वित्त=धन । अंबु=जल । हित=हितकारी ।

२२—कूयरो=कुयड़ा, टेढ़ा-मेढ़ा । नखत=नक्षत्र, तारा ।

२४—गाढ़ा दिन=कष्ट का समय ।

२८—वमन करि=कै करके । स्वान=कुत्ता ।

३०—रसहिं=आनन्द को । बंधु=मित्र, भाई ।

३२—पिक=कैयल ।

३५—मुनि-पतनी=गौतम ऋषि की स्त्री अहम्या ।

३६—नाद=संगीत का शब्द ।

४२—दही=जलाई, मेटी । भावी=होनहार ।

४४—मही=मट्टा, द्वाड़ । विलगाय=अलग हो जाता है । भीर=कष्ट, विपत्ति ।

४५—पैग=पैर । वमुधा=प्रधिर्वा ।

४७—लाइये=लगानी चाहिए ।

४८—सहसैंति=शान्तिसहित ।











८—पाती-पर्णी; गुलसी, विन्ध्यपत्र आदि । मेहरा-हार । महरा-  
श्यामारिक अवस्था । मेहरा-घर । मून्ध=शून्धावस्था । अज्ञान  
तम मेहरा=अज्ञानांधकार वा नाराक । माम-भगवान् ।  
नाम । मेहरा=मंदिर ।

### १५—विहारी-मुक्तानली

१—भव-वादा सांसारिक दुःख । मागारि-बनुर । भाँ-भयक  
हरिम दुनि हरे रंग की गोभा, पीछे अर्थान्तिजही ब  
हू ली गड़े हो ।

३—काष्ठनी कमर में पड़ने का एक प्रकार का बन्ध। बाहिरी छटा।

३—एति हानः । आय-द्वयं ।

४ गुप्ता भेषजी । अमनि मरुहमी है । दावानल-वन में बड़ा  
हूँ आता । एक बार मरुह के वन में बड़ी ही बड़ा  
आता । वन में । आता । आता । आता । आता । आता ।  
५ इन्द्र देवता । आता । आता । आता । आता । आता ।

• १५ मार्च

— \* \* \* 44-71-77 2A 412 174-CH.

— 44 —

— 43 —

— १५५ —

१५३० ई. स. ७-८ दशक इंग्लैण्ड।

— ३८८ —      श्री १०८      श्री १०८      श्री १०८      श्री १०८      श्री १०८

4-2-74 AT 1344

— १११ —

- ४—दुग्ध-दूध । राजाश्वी का पथ । राध-राजन । दंड-दण्ड ।  
मावस-अमावस ।
- ५—भृति-भूति, वेद । मुमुक्षु भृतिः । धर्मशास्त्र के ग्रन्थ ।  
नियत-नियत ।
- ६—घटक-घमक । रज-भूत । राजस शासन । नेह- ( १ ) प्रेम  
( २ ) तेल ।
- ७—कुंग-गुग ।
- ८—नागर-चतुर । व्याघ्र-जत ।
- ९—शरान-शक्ति-धामन । शराध पर-पितृपक्ष ।
- १०—वायस-चौथा । यलि धातु का भोजन ।
- ११—सर्ग-काम आता है । कौंच मन कपटी ।
- १२—करिया-कंधट, मल्लाह । संधि-संज्ञ । पाहन-पत्थर ।
- १३—भजन=( १ ) भजन करना ( २ ) भागना । भज्यो=( १ )  
भजन किया ( २ ) भागा । तासों-परमेश्वर के नाम से ।  
जामों-संसारी विषयों में ।
- १४—पतवारी=करिया ।
- १५—दोरघ सांस=आह । साई=ईश्वर ।
- १६—अनाफनी=अनमुनी करने की क्रिया । गुहारि=पुकारि ।  
वारक=एक वार । वारन=द्वार्थी ।
- १७—आनि=स्वभाव ।
- १८—वाय=हवा ।
- १९—यलियै=यलिहारी ।
- २०—अपना-अपना विरद=अपना अपना वानाः जीव का पापों  
का कमाना और परमेश्वर का पापों का नाश करना ।







## १७-बुद्धि-युग्मन

१—मोर पन्ना-मोर के पन्ने । लोल-चबूट । साईं हो सार्ने ।

पुनरि- ( १ ) सायम्भ, सुन्दरना ( २ ) नमोऽस्तुते ।

३—निगम-वेद । आगम-ग्रन्थ । सूत्रानि चतुर् ।

४—भाद वासिष्ठ रात्रि ऋतु के मेष । धौतहर इन्से मजान ।

धीर-धृति, साहस : नीति नयन, मर्दान :

६—वेनु-यामुरो । निगाद-राष्ट्र । बीना      चर बागा और

बसिन्धरी के मधुर स्वर से चट्टमा के लथ में जुने हुए भास

माथ होकर टहर जाने दें । फिर चट्टाना नीचे आगे बढ़े ।

इति एति और एलो । अनइ आनन्व. गिप्रास ।

५—इसी दिनु जनु इ दे—वसन्त धाम इया. शरण.

शिशिर, और हंसन : लुनना स्वा

८—संस्कृत नीतिम । भवान् मेमांसा, विद्वान् । भूतल मया मया ।

ਫਾਰ ਫਾਰਮ। ਅਰਥਾਤ ਸੂਚੀ। ੧੪ ਕਮਿਸ਼ਨਰਜ਼ ਨੂੰ ਪਤੀਫਾਰ



५—सायग हाथी । बरु ह क चक्रे व न ॥ १ ॥ वने ॥ गति म

अथ यन्त्राणां नामाणि । इति ।

१८ - १५५ पृष्ठ । कल सप्तम, मधुर ।

**एक —** कथित है कि १ फरवरी १९७० को जयपुर में एक सभा हुई।

१३५ ३५। ३३ ३५।

१८—चित्रक पर्वा । १७८ चक्र ।

६३— अजयदेव! ममाय विद्या है कि ५ वि मम उ एक ममने

नमो बटवृक्ष दिव्याङ्गना ॥ उमरु ॥ रूपने पर नारायण

शिशु रूप धारण कर सकते हैं और समस्त मनुष्य की अपर

## २१—मिद्धान्न-भार

- १—दिनभंगु=क्षणभंगुर, नाशवान । नागर=चतुर, शक्ति ।
- २—कल्पना=मिथ्या विचार । फलट=लट्वा-भटाट्टा । भिद्यार=भो  
रोपना धाति । प्रपंच=चटमार=गुटी धाला घी पाटसाला ।
- ३—कृप=पुँ.वा ।
- ४—जगमगी=भट्क. गहा है ।
- ५—हुम देह । हुंपति=पति-पत्नी । भीषण शरीर बाधा से  
नाशय है ।
- ६—पति=पति, भीमाधिपति घी गाता । प्रपभातु=भी  
राधिपति घी पिता ।
- ७—मौवरा=रुद्राग, भीषण । मन्भावरा मन्तावादि । रक्त-  
हृद पातना धाति ।
- ८—नागरि=नागराचार

## २२—मिरपर की कुहली-पाँ

१ मिरपर की कुहली-पाँ

२ मिरपर की कुहली-पाँ

३ मिरपर की कुहली-पाँ

४ मिरपर की कुहली-पाँ

५ मिरपर की कुहली-पाँ

६ मिरपर की कुहली-पाँ

७ मिरपर की कुहली-पाँ

८ मिरपर की कुहली-पाँ

९ मिरपर की कुहली-पाँ

१० मिरपर की कुहली-पाँ

५—मित्य=शिक्षा, उपदेश । भेषज=दवा ।

६—आसी=दर्पण ।

७—ओछा=नीच । छोलर=छिछला, जिसमें थोड़ा ही भरा हो ।

११—पिसुन=कपटो । दाभ्यां=जला हुआ । द्यौं=मट्टा ।

१२—गिरवा=पेड़ ।

१४—रसरी=रस्सी । सिल=शिला, पत्थर ।

१५—विलम=विलम्ब, देर ।

१७—अयोध=मूर्ख ।

२०—उदधि=समुद्र । नाय=पानी ।

२१—आँक=अंक, बात ।

२२—सरसुति=सरस्वती ।

२५—गारि=गाली ।

२६—अष=आम । नियौरी=नीम का फल ।

२८—नौर=जगह ।

२९—नौर=वैर । त्रिने=तीन में ।

३१—परचै=परिचय, पहिचान । भाय=भाव ।

३२—गाथ गाथा, कथा ।

३३—निदान परिणाम, कारण । भान=भानु मर्त्य ।

३५—विभौ=विभव, ऐश्वर्य । उच्छुक्क=उच्छ ।

४१—वमाय वरा ।

४२—मांटी=बड़ी, गम्भीर । पात्र=वस्त्रन ।

४५—रमन रमना, जीम । कछप=कञ्छप कलुवा ।

४८—लोक=लोग । पय=दूध । पयोधर=धन ।

## २१—मिथान्न-मार

- १—द्विभंगु=द्वयभंगु, नाशवान । नागर=चतुर, रसिक ।
- २—कल्पना=मिथ्या विचार । फलद=लड़ाई-भगड़ा । नियारनो गेफला चाहिए । प्रपंच-घटमार=झूठी बातों की पाठशाला ।
- ३—पूष=कुँवा ।
- ४—जगमग=मलक रहा है ।
- ५—दुम=पेड़ । दंपति=पति-पत्नी; श्रीकृष्ण और राधा से नापसंद है ।
- ६—फोरति=फोर्सि, श्रीराधिकार्जी की माता । वृषभानु=श्री राधिकार्जी के पिता ।
- ७—मौवरां=श्याम, श्रीकृष्ण । मनभावरो=मनोवांछित । रसा-इये=पागला चाहिए ।
- ८—'नागरिया'=नागरीदास ।

## २२—गिरधर की कुंडलियाँ

- १—अपावन=अपवित्र, अशुभ । गाहक=प्राहक, खरीदनेवाला, फट करनेवाला ।
- २—अपंग=लूला-लंगड़ा, अंगहीन । सौह=शपथ । परिहरिय=छोड़ दें ।
- ३—त्रास=भय । लंकेश=रावण । बाज्यो=कहलाया, प्रसिद्ध हुआ ।
- ४—नारा=नाला । नारै=नाई, मारें ।
- ५—परस्वारथ=परार्थ, परोपकार । सीस.....दीजै=प्राणों का नोह छोड़ देना चाहिए, प्राण-पण से रक्षा करना चाहिए । पानी=मर्यादा, इज्जत आवर ।
- ६—आहूतहि=गहते हुए ही । बाज=एक शिकारी चिड़िया ।



तेज से भस्मीभूत अग्नि साठहजार पूर्वजों का उद्धार करने के लिए, पृथिवी पर गंगा को लाये थे । बिल्लानी=व्याकुल, तीन-तेरह ।

७—गात=शरीर । उराहना=उपालम्भ । मोच=मौत । आप=जल । कालकूट=समुद्र में से निकला हुआ विष, जिसे शिवजी पी गये थे । अटहर=ढेर, संज । तात्पर्य यह कि गंगा-जल-पान करते ही जीव शिवरूप हो जाता है ।

८—जन्हु=एक ऋषि, जिनके नाम से गंगा का 'जान्हवी' नाम पड़ा है । आर्द्धी=अर्द्धी, उत्तम । धनेस=कुंवर । मौलि=शिर ।

९—निगम-निदान=वेद का रहस्य । हाँ=हृदय । तच्छन=उसी समय, तुरंत । प्रतच्छन=प्रत्यक्ष । अर्द्ध=अर्ध । इंदिरा=लक्ष्मी । बाँधे=विधे हुए, बाँधे हुए, उलझे हुए । भव=संसार । गुर्विद=गोविंद, भगवान् ।

१०—असम=जो घराघर न हो; यहां तीन से अभिप्राय है । लाइ=लगाकर । कूट=शिखर । भंगै=भंग के । पूछतो=इच्छत करता ।

११—भामी=धोखेवाज, धूर्त । अवाइन के=आगतों के, आने के । सोर=शोर । वाट हेरै=प्रतीक्षा करते हैं । नौदिया=नंदा; शिवजी का वाहन ।

१२—रस=आनंद । रौरव=एक नरक । विथा=व्यथा, कष्ट । सुरी=गुरीबी । साहिवी=अमीरी ।

## २४—अन्योक्तियाँ

१—प्रसून=फूल । सिख=शिक्षा, उपदेश । कोटि=करोड़ । बहोरि=फिर । बहारि दिन=वसंत ऋतु । सारंग=भौरा ।

- २—संमर=शात्मलि । माधवी=लता विशेष । पूरे=पूरी की । मुर-  
सरि=वारि=गंगा-जल । विहाय=छोड़कर । पट्पट=भौंरा ।  
पसुते=इयोढ़ पद=जानवर से इयोढ़े अर्थान् छः पैर !
- ३—सालमडो=शात्मलि, मेमर । गोधे=लट्ठबाधे । अमिष=मांस ।  
अली=भौंरा । अनुकूले=अनुरक्त हुए । मुक=शुक, तोता ।
- ४—रद=दौत । केहरो=सिंह । जरा=बुढ़ापा । जंघुठ=मियार ।  
गाजै=गरज रहे हैं । नूँबरी=लोमड़ी । ससक=मरहा ।  
मुतंत्र=स्वतंत्र । पंगु=लैंगडा ।
- ५—थाट=राला ।
- ६—उनै=वहो; परलोक । इन=यहो; ममार । तरनी=नौका ।  
पथी=पथिक ।
- ७—जरजगी=पुरानी, टूटी-फूटी । मवर=चक्र, आवर्त्त । पाहि=  
रक्षा करो ।
- ८—मुखमा=शोभा । जानि=उपनामा । पडव पना । दुति=  
शोभा । अलि=भोग । मारक=मार डालनेवाली ।  
धिस=विष ।
- ९—पाती=चिट्ठी । गे=गये । भासै=मान्यमान होता है । तम=अंधेरा ।  
मवासो=घर । चर=चल, अनिय ।
- १०—मुगनी=मुक्ति । चेत=चना द, प्रत्यलित करदे । सिधि=मिथि ।  
लाव=लगाया । भेय=कल्याण ।
- ११—बायरी=पमली, भोला-भाली । वाम=बायाँ । नैहर मायकी ।  
बन=पति, परमात्मा से आशय है । तत=तत्र, मनमाना  
काम । नाह=नाथ, पति । कै=कर । नूयि=अलकृत होकर,  
गहन पढ़न कर । अनुकूनै=अंम कर ।





- ७—प्रतप्त=प्रयत्न । लुप्त=स्वप्ने हैं । अविप्लव=झों का लों, पूर्ण । कानिदी=यमुना । जिनी=जितनी । रजत=चोरी, खेत । चन्द्ररत्न=उज्ज्वलता है । निसिपनि-चंद्रमा ।
- ८—कुज्जत=बोलाते हैं । कल=सुंदर । पारावन=परेवा । कारंडव=सारस । जल-लुप्त=पत्ती विरोध । चक्रवाक=चक्रवा । बक=बगुला । पिक=कोयल । शेर=शोर ।
- ९—बालुका=बालू । बगराये=फैलाये, झिगाये । मुक्त=मुक्ता, मोती । चिबुर=बाल ।

## ( २ ) स्मृतान्

- १—उदर=पेट । परसन=घृता है । लाला=सल । मुचा=पमडा ।
- २—कपाल-क्रिया=हिन्दू धर्म के अनुसार एक मृतक-संस्कार । जो मृतक की अन्त्येष्टि क्रिया करता है, वह उसके शिर में एक लाठी से छेद कर देता है । कहते हैं, इस से मृतक की जीवात्मा ऊर्ध्वगमिनी हो जाती है, अर्थात् वह मुक्त हो जाता है । भोज=भोजन । सुभग=सुन्दर । कुह=एक महा प्रनापी राजा, जिसकी मंथान कौरव के नाम से प्रसिद्ध है । दधीचि=एक परमत्प्राणी ऋषि, जिन्होंने इद्र को वृत्रामुल-बध के लिए, ब्रह्म बनाने के अर्थ अपनी अस्थियां जीवित अवस्था में ही दे दी थीं ।
- ३—उचाटन मंत्र=उचाटन मंत्र, इस मंत्र के प्रयोग से जिसपर इसका प्रयोग किया जाता है उसका किसी विरोध व्यक्ति या स्थान से चित्त उचट जाता है । सोपरी=सोपड़ी । कापालिक=वाममार्ग के अनुसार एक साधक, जो नर-कपाल चित्र रहता है ।



पर का पसी, जो डवर-उधर उड़ कर अठ में फिर लक्ष्य  
पर ही आ जाता है : जिसे अनन्य रीति से एक का ही  
आश्रय है । पगये=दूमेरे । कादिहि=व्यर्थही ।

८—मरग=स्वर्ग । हेम=मोना । बेरी=बेड़ी । परमारय=मोक्ष मार्ग ।  
स्वारय=व्यवहार । फेरी=धनर । आयुम=आयु । लार=  
प्रसन्नलिन ।

९—अधिचल=अटल, निरंतर । दहते=जन्म देते ।

१०—प्रतापनारायण मिश्र की कुछ कविताएँ

( १ ) जलगीत आधारा

६—प्रतिपान्द कालन-पापण । यथा=स्यथा, कष्ट । निशान प्रता-  
पे चिन्हून अनाड़ी, निपट मूढ़ । कीरति कीरति, उर ।  
मुधा अमृत । समये शक्तिवाला । पकज कमल । बलिगरी  
न्यौदावर

७—अवार आवार, अचलस्थ । अतिमै आतिशय, बहुत आधिक ।  
पेरने=फाँट फाँट गेह में । निरुनन=स्थान ।

( २ ) दुःखा

—तकन्याय निवृत्त नाशो हम आगया, हेरान हो गये । नाने=  
काव । चटक पकाशवान । मद्रिम=मद । खन=लग्न ।  
निखवस्य चिन्हून, मय । लम्हून चलण । अखिल अर ।

८—शान्ति किमी । शिखरा समय । महुइ मुडही । दीय शर ।

९—पाकमी एकम पापलान खोखला हो गया । पाकि नै=  
रूक गया मरुत हो गया । गीगै कमर भी । रशवन=राव ।

४—वृत्ते=चलपर, सहारे से । डोलिन-डालित हैं=चलते-फिरते हैं ।  
खरारत फिरत रहन=फैलते फिरते थे । पेम्पन का=ऐसीको ।  
हन=हैं ।

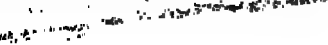
-( ३ ) फुडका पद

१—मनुष्यो=मन । धृतत=ठगता है । गाहरावन=पुकारता है ।  
साहय=मालिक, ईश्वर । घट-घट=शरीर-शरीर, हृदय-हृदय ।  
हियो=यहाँ । सयाना=चतुर ।  
२—ठोरी=स्थान । गोरी=सी । भोरी=भोली, झूठी । तारी=तेरी ।

२७—रंक-रोदन

१—मृत्युपर्यन्त=मौत तक । अनुभूत=अनुभव किया हुआ,  
भोगा हुआ । कपूर न होगा=कारूर न होगा, उड़ न जायगा,  
नारा न होगा ।  
२—वर्ण-उपाधि=अक्षरों का मिताय—जैसे के, सी, एम, आई,  
डी, लिट् आदि ।  
५—पौध बाप की पाग=पिता की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर  
लेकर, पिता का स्थानापन्न होकर । कुनथा=कुटुम्ब । निरं-  
कुश=मृत्यु ।  
६—कोश=रखाना । संघित=जमा किया हुआ । परिणाम=  
नतीजा ।  
८—आराम=शान्ति ।  
९—इनमालपेट= ( खैरतखाना ) दिवालिया । विभूति=ऐश्वर्य,  
धन दौलत ।  
१०—दुर्बाह=पुरे बचन, निंदा ।  
११—विश=पीड़ित, विह्वल । धर्म-धुरंधर=धर्म का शोभा उद्योग  
वाले, परम धार्मिक ।

- १६—विरद=यश । रस=आनन्द, मंगल ।
- १७—पौरुष=पुरुषार्थ । विषाद=शोक ।
- १८—हामि=अवतति । अदम्य=जिमका दमन न किया जा सके, जो दूर न हो सके ।
- १९—गोरस=दूध-दही । पिसान=चूने, आटा ।
- २०—पोस्वा=थढ़िया । अइ जाने हैं=मचल जाते हैं । मनमानी=मनचाही । काइ कनेजे=दुःख में हृदय के टुकड़े-टुकड़े करके ।
- २१—कूल-कूनकर=प्रमत्त हो होकर । व्यंजन-मोजन की चीजें । पानेवाले=गानेवाले, गाने के अर्थ में 'पाने' का प्रयोग माधुष्यों में—विशेष कर वंशजों में—पाया जाता है ।
- २२—टका=दो पैसा, यगना में टका' में रुपये का बोध होता है । ज्ञायमों' न भी टका में रुपये का बोध कराया है ।
- २३—दाइ मट्टा । मंगी मट्ट में चावल पका कर मंहेरी बनाया जाता है । इसका प्रचलन मत्त और बंदेलगढ़ में अधिक है ।
- २४—गइ गही का पइ । अटम्यइ बहा के टुकड़ ।
- २५—पनियाग प्रनाकार दूर करने का उपाय ।
- २६—कहारे सिंह । नाइ शीज । बडाइक मय । अस्थिर चचक । विपग विव ।
- २७—पनियाहार नम ।
- २८—इइ भयाउक ।
- २९—अरजितु मडा । अइ मय । मय । इइ भिय । परि-पय ममान ।
- ३०—बसाहार कपड और भाचन ।
- ३१—नगनी समार गइ गराव ।



१५—नाह लहाने हैं=पार करने हैं । पुयक=अलग । रसमय-  
अनन्दमय । अज्ञानो=अनभिज्ञ ।

१६—पारा=पंखा । शिविलित=टूटा । बाहुव्यता=अधिकता ।  
अशक्त=रुका हुआ ।

१७—गगनत=काँधारिम । आवाम=निवास-स्थान । अरोप=  
सपूर्ण ।

### २२—सदमी-पूजा

१—सर्वायम=सब उपवासों के योग्य । ज्ञानि=ज्ञानि, प्रहारा ।  
नम=प्रणाम ।

२—अनवरण=मारे हुए के समान । निमज्ज=निमज्ज । गुरपनि=  
गुरु । २२ नैन मर जाय की=अग्नि में आगियों की वर  
गने लगा ।

३—अद्वयन कि=विच्छेदना किता है । अन्तो=अन्तिम । पोरि=  
अन्तःकर

बोला २२२२

१११११-११११ ११११ ११११ ११११ ११११

११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११

११११ ११११ ११११ ११११

११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११

११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११

### ३—पुष्पादा विमान

१—११११ ११११

११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११







१—सौर=दूध । मित्त=वर्षादिगत सौर-मित्त मित्ता दृष्ट्या जल;  
मिहोदक से पिनगं पों नपेण किया जाता है ।

२—अनितक्रिया=सूतक-संस्कार । मित्त=जलायु से तात्पर्य है ।

३—अकिंपन जिसके पास शूद्र भी न हो, पद्मादौ गरीय ।

४—शेष=बाक़ी, अन्य ।

५—जनक=उपनिषद्वा । जनार्थ=अनिष्ट, दुःख । विमल  
नदाह ।

६—स्वर=स्वर्ग ।

७—छार=सार, भस्म ।

८—संजावनी=पाद शूद्रों जिसके संघन से मृतप्राय भी जी  
वठता है । कृष...जायगा=आप चल समेंगे ।

९—वायु का पुत्र हनुमान । घंटा=चंदनीय ।

### ३५.—व्रजभाषा

१—भुवन-विदित=लोक-प्रसिद्ध । भुवि=भूमि । रस पूर्ण=आनंद-  
मय । विभुराई=पैलाई । मंजु=सुन्दर । सुपर्राई=चतुराई ।

२—काम-अभिराम=इच्छाएँ पूरी करनेवाले । सहृदय मनि=  
सरस बुद्धिवाले ।

३—अरविंद=कमल । मकरंद=पराग । मलिंद=भौरा । विरमत=  
रमते हैं ।

४—कलिदिनि=यमुना । जीवन=जल ।

५—कलिमलहर=कलि के पापों को नाश करनेवाला । मजु=  
सुन्दर । मुचि=शुचि, पवित्र ।

६—कूल=किनारा । कुसुमित=फूले हुए । ओक=स्थान । निकंदन=  
नाशकर्ता । मुकुलित=प्रफुल्लित ।

- ५—वार्ता-रचना, कविता । गीतम=रंगीत हुआ । आकर=कवि ।  
सदम-स्थान ।
- ६—अनुचना उर्फ उपा । रहम-रहमि=कुल-कुल-कर । यही  
धमर । आनति=शोभित है ।
- ७—आनति पुत्री । व्यक्त-प्रकट ।
- ८—रमतेन=आनंद की स्थान । योग-मेन । विवेकी गंगा, यमुना  
और सरस्वती की संयुक्त धाराएँ ।
- ९—जयार्थ यथाथ । मयदि-मयति हट करके ।
- १०—अवमेम=अवगम, बाँट । आरत आर्य ।
- ११—वृष्टि=कमी । गमन आई पूरी करती आई है । सिरकारी  
महा ।
- १२—मिनाम मिनाम ।
- १३—विमला मीन ग मीन ५० हद । वाचन वाचन  
१४—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
१५—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
१६—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
१७—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
१८—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
१९—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२०—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२१—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२२—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२३—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२४—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२५—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२६—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२७—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२८—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
२९—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन  
३०—विमला मीन ५० हद । वाचन वाचन

- १—भीरु=भीड़ ।  
 ५—हिगाय गयो=ग्यो गया । टकलाय=टक लगाकर । नै=नम्र ।  
 दीटि=दृष्टि ।  
 ६—भव-विभव=सांसारिक ऐश्वर्य । विभूति=ईश्वरता । सहसि=  
 दबकर, डर कर ।  
 ७—कंथा=कथरी, गुद्दी ।  
 ८—दाय=म्वत्य । संकेत=इशारा । आदेश=आत्रा ।  
 ९—परिधान=वस्त्र । सैनिक=सिपाही ।  
 १०—विहाय=छोड़कर ।  
 ११—वास=वस्त्र । कपाय=गुरुवा, संन्यासियों का वस्त्र ।  
 १३—मर्त्य=मरनेवाले, अनित्य । धर्म=कवच । कतहुँ=कहीं ।  
 श्रेष्ठतर=बहुत ही श्रेष्ठ । तथागत=बुद्ध । नन=मुका हुआ ।  
 निधि=संपत्ति ।  
 १४—चकराय=चकित हो कर । मंगुटित=भरे हुए हैं, व्याप्त हैं ।  
 १५—अष्टांग मार्ग=बौद्ध धर्म के अनुसार सम्यक् दृष्टि, सम्यक्  
 व्यायाम, सम्यक् संयम आदि आठ साधन, जिन्हें साधने  
 से जीव 'बुद्ध' हो जाता है । युग्माय=समंजस कर । रंक=  
 गरीब । नाच-शुद्ध । मोपान=सीढ़ी ।  
 १६—जरठ-बूढ़ा । भवचक्र=संसार का, जन्म-मरण का चक्र ।  
 निर्वात=मोक्ष । प्रामाद=महल । पीयूष=अमृत ।  
 १७—यशोभरा=नीतम बुद्ध की स्त्री । आभा=कांति ।

### ३७—पार्थ-प्रणिज्ञा

- १—करतल दधेली । युगल=दोनों ।  
 २—धालगवि=प्रातःकालीन सूर्य । बोधित हुआ=मालूम हुआ ।

३--अरुणिमा=आली । अनरु=आग ।

४--नामापुट=ननुये, नधुने । भूरि=बहुत । भीरुग=भयंकर ।  
घोष=राज्य । फण=फल । फनि=माँप ।

५--परिनि दृग्-धिम गये । विरुगित=कड़कने दृग् । पद्य=कमल ।

६--उत्ताप=जलन । अरिदम=राज्य की कों मारनेवाले । कर्मा  
लोभ । यक्षशा=विजयी । अशुद्ध=मेष ।

७--पार्श्व=दृष्टा के पुत्र अशुद्ध । मत्सर=शीत ।

—निधन=मृत् । कमुल=मुल्ल दृष्टा । गौरव=एक महा भयंकर  
नरक ।

८--शर नक्ष वाग्ग का निशाना ।

—किञ्चर=देव-यानि विभेद । अ नृतिन कलरु=गोदन कपूर ।

—उपयुक्त=टीक यक्ष ।

अशुद्ध=अशुद्ध भगवान् अशुद्ध पुनःवापि=मातृ ।

९--वया-विभक्त वाग्ग की माया दृष्ट=दूरपरिच, पुट  
प्रमा=प्रमा

—'वय'=वय 'वय'=वन वादव=मयुट की आग । वय  
वा'द'व

—'वय'=वय 'वय'=वन वादव=मयुट की आग । वय  
वा'द'व















**रसग्यानि**—यह दिहौ के पठान थे। शाही छन्दान में इनका जन्म हुआ। पहले इनका नाम इबराहीम था। स्मरण रहे, यह पिहानीवाले इबराहीम नहीं थे। इनका जन्म अनुमानतः सन् १६१५ के लगभग हुआ। युवावस्था में यह किसी बनिये के लड़के पर बड़े ही आशक्त थे। सोछे, यह प्रेम शोककृत्य की ओर पलट गया। यह गुमाई बिट्टलनाथजी के कृपापात्र शिष्य थे। २८४ वैष्णवों की बातोंमें इनकी भी बातों है। रसग्यानिजी परम प्रेमी और वैष्णव थे। इन्होंने मजमापा में बड़ी ही सकलता के साथ कविता की है। इनकी भाषा में शब्दाङ्गुसर बहुत ही कम है। प्रेम का तो इन्होंने पेसा चित्र रखा है कि देखते ही बनता है। 'सुजान रसगान' और 'प्रेम-यादिका' नामक इनके दो ग्रन्थ 'मिलते हैं'। अनुमान में इनका देहान्त सन् १६८५ के लगभग हुआ।

**मेनारणि**—मेनारणि का जन्म सन् १६४५ के लगभग हुआ। यह अनुपगढ़ का निवासी कुलन्दगढ़, के निवासी थे। 'पना' का नाम लगाकर और 'पनामह' का परगुणम था। हारामणि शर्मा नामक काट मजान इनके गुरु थे। इनका पवित्र मेनारणि नम्र अथवा एक कविता में दिया है। पहले यह बड़े ही भुंगारी हारि थे। बाद में गुरु-महाराज का गुरु। लुगाह और गान, दोनों का रस। इनका रचना किया है। यह सधमुच हा महाकवि हैं। इनका रचना करने का मन्ता नहीं है। इनके विरह कविता बड़े ही सुन्दर हैं। इनका 'मिरा कविता-प्रकाश' नामक ग्रन्थ मिलता है, जो अब अखण्डित है। इनका मृत्युकाट २१ १७८५ के लगभग है।















अब लिखें । जान पड़ता है, घायूसाहब साहित्य-सेवा करने के लिये ही अदतीर्ण हुए थे । जब तक हिन्दी भाषा रहेगी, तब तक भारत-न्दु घायूहरिश्चन्द्र का भी नाम रहेगा । मरवत् १९४२ में यह गोलोकधाम का सिधार गये ।

प्रतापनारायण मिश्र—मिश्रजी का जन्म संवत् १९१३ में हुआ। इनके पिता का नाम पंडित मंकाटाप्रसाद था। यह कान्य-  
कुब्ज ब्राह्मण थे। इन्होंने हिन्दी, उर्दू, फारसी और संस्कृत में  
अच्छी योग्यता प्राप्त करली। अंगरेजी का बहुत ही आधारण ज्ञान  
था। बापू हरिश्चन्द्र की रचनाओं को यह विद्यार्थि-सबसे से  
ही पढ़े पाठ में पढ़ते थे। इनके पढ़ने में पविता करने की ओर  
यह प्रवृत्त हो गये। इनके काव्य-गुरु पानपुर के सुप्रसिद्ध कवि  
"ललित" (ताम्रनामप्रसाद त्रिपाठी) थे। सन १८८३ में मिश्रजी ने  
"साधन" नामक एक मासिक पत्र निकालना शुरू किया। यह  
बहुधा ही चित्त आकर्षक था। उस समय तक चलता रहा। कुछ  
दिन बाद ही यह पत्र बंद हो गया। वह यह कार्य बंधाव से ही इनका  
रचना था।







में विरले ही मिलेंगे। आप का जीवन, घाम्मव में, मृत्यु और धन्य है।

**जगन्नाथदास 'रत्नाकर'**—रत्नाकरजी का जन्म काशी पुरी में, संवत् १९२३ में, हुआ। यह अमवाल वैश्य और राधा-रमणी वैष्णव हैं। इन के पिता का नाम घाबू पुरुषोत्तमदास था। सन् १८९२ में आपने बी० ए० की परीक्षा पास की। सन् १९०२ में यह स्व० अयोध्या-नरेश के प्राइवेट सेक्रेटरी के पद पर नियुक्त हुए। पीछे श्रीमहाराजी साहवा ने इन्हें अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बना लिया। अब भी आप एक प्रकार से उसी पद पर हैं। कार्मका के आप अच्छे ज्ञाता हैं। कविता ब्रजभाषा में करते हैं। आप का साहित्यिक ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा है। कविता मर्म और भावमयी होती है।

**गाय इंद्राप्रसाद 'पूण'**—गायमाहव भदरम, जिला-कानपुर, के रहनवाला थे। जबलपुर में इन्होंने शिक्षा पाई थी। आप बी० ए०, बी० एल० थे। कानपुर में वकालत करते थे। धाड़ ही दिनों में नामी वकील हो गये। नगर भर के लोग इन्हें चाहते थे, क्योंकि बड़े ही मिलनसार, परोपकारी और सन्धे थे। गायमाहव सार्वजनिक कार्यों में सदा भाग लिया करते थे। आप धियासांफिस्ट थे। सनातनधर्म पर बड़ी श्रद्धा थी। हिंदी पर इनका विशेष रूप में प्रेम था। बागवत-वाचन और चंद्रकला भानुकुमार नाटक पूणजी की उत्तम रचनाओं में हैं। आपका कविता बड़ी चूटानी होती थी। कविता अधिकतर यह ब्रजभाषा में करते थे। इनका साहित्यिक ज्ञान प्रामाणिक माना जाता था। इस युग के हिन्दी-कवियों में पूणजी का स्थान, घाम्मव में, उंचा है।



